पी.एस.बी.

पी. एण्ड एस. बैंक

राजभाषा अंकुर

जून 2023

੧ੳ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ ॥

पी.एस.बी.

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

Punjab & Sind Bank

ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ

(भारत सरकार का उपक्रम / A Govt. of India Undertaking)

राजभाषा विभाग

पंजाब एण्ड सिंध बैंक के नए कॉरपोरेट कार्यालय का

उद्घाटन

माननीय वित्त एवं कॉरपोरेट कार्य मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारामन ने डॉ. भागवत किशनराव कराड, माननीय राज्य मंत्री (वित्त) और डॉ. म. प्र. तन्गीराला, अपर सचिव, वित्तीय सेवाएं विभाग की उपस्थिति में एनबीसीसी कॉम्प्लेक्स, पूर्वी किदवई नगर, नई दिल्ली स्थित बैंक के नए कॉरपोरेट कार्यालय का उद्घाटन किया। इस अवसर पर माननीय वित्त एवं कॉरपोरेट कार्य मंत्री के कर कमलों से बैंक के एतिहासिक यात्रा को दिखाने वाली ई कॉफ़ी टेबल बुक का भी अनावरण किया गया।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका

राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

बैंक हाउस, प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली-110 008

जून 2023

मुख्य संरक्षक

श्री स्वरूप कुमार साहा
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

संरक्षक

श्री कोल्लेगाल वी राघवेन्द्र
कार्यकारी निदेशक

डॉ. रामजस यादव
कार्यकारी निदेशक

मुख्य संपादक

श्री गजराज देवी सिंह ठाकुर
महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक व प्रकाशक

श्री निखिल शर्मा
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

श्री देवेन्द्र कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
श्रीमती मोनिका गुप्ता, प्रबंधक (राजभाषा)
श्रीमती भारती, प्रबंधक (राजभाषा)
श्री मोहन लाल, राजभाषा अधिकारी

ई-मेल : ho.rajbhasha@psb.co.in
पंजीकरण सं: एफ.2(25) प्रैस. 91
(पत्रिका प्रकाशन तिथि : 30/07/2023)

'राजभाषा अंकुर' में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार, संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं है। सामग्री की मौलिक एवं कॉपीराइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं।

मुद्रक : बी.एम. ऑफसेट प्रिंटर्स

एच–37, सेक्टर 63, नोएडा, उत्तर प्रदेश – 201301
फोन नं. : 0120 4111952, 9811068514
ई-मेल: bmoffsetprinters@gmail.com

विषय-सूची

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संपादक मंडल/ विषय सूची	1
2.	आपकी कलम से	2
3.	संपादकीय	3
4.	बैंकों में हिंदी अनुवाद के दौरान बरती जाने वाली सावधानियाँ	4-6
5.	ग्राहक के मुख से	7
6.	संसदीय राजभाषा समिति का रायपुर दौरा	8-9
7.	शून्य कार्बन उत्सर्जन की ओर भारत के बढ़ते कदम	10-13
8.	हिंदी कार्यशालाएं	14-15
9.	हमारी बेड़ियां	16-17
10.	बैंकिंग और साइबर सुरक्षा	18-21
11.	स्थापना दिवस समारोह 2023	22-23
12.	मेरी महू/इंदौर यात्रा	24-26
13.	ज़रा सोचिए!	27
14.	राजभाषा उपलब्धियां/गतिविधियां	28-29
15.	काव्य-मंजूषा	30-31
16.	संसदीय राजभाषा समिति का शिमला दौरा	32-33
17.	ई-कॉमर्स और जेम पोर्टल	34-36
18.	संपर्क भाषा हिंदी और इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यम	37-39
19.	संसदीय राजभाषा समिति का लखनऊ दौरा	40-41
20.	मुझे ऑफिस जाना है।	42-43
21.	नई शाखाओं का शुभारंभ	44

आपकी कलम से.....

बैंक पत्रिका का मार्च अंक प्राप्त हुआ– आभार। निःसंदेह पत्रिका की साज–सज्जा, पृष्ठ संयोजन व प्रस्तुति में मेहनत साफ़ दृष्टिगोचर हो रही है। सभी लेख ज्ञानपरक व सुरूचिपूर्ण हैं। प्रसंगवश मेरे प्रकाशित लेख "ढाई आखर प्रेम के" को जिस मनोयोग से प्रकाशित किया गया है, उसके लिए संपादक मंडल को साधुवाद। कलात्मक पक्ष की दृष्टि से यह पत्रिका अन्य बैंकों की पत्रिकाओं से अधिक आकर्षक व कलेवर की दृष्टि से उत्तम बन पड़ी है।

आपने अपने संपादकीय में बहुत सारगर्भित बातें की हैं, बैंक की निरंतर लाभप्रदता के लिए उच्चाधिकारियों की दूरदृष्टि व मेहनत को श्रेय जाता है। बैंक की निरंतर प्रगति के लिए ढेरों शुभकामनाएं।

–डॉ. चरनजीत सिंह
सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

मुझे "राजभाषा अंकुर" पत्रिका का मार्च 2023 अंक प्राप्त हुआ। राजभाषा 'अंकुर' पत्रिका अंक दर अंक विभिन्न रुचिकर लेख–सामग्रियों और छायाचित्रों के बेहतर संकलन से सुसज्जित होती जा रही है। पत्रिका में कुछ लेखकों ने ऐसी कविताएं लिखी हैं जो जीवन की वास्तविकता का परिचय कराती हैं जैसे– बैंकिंग, महिला सशक्तिकरण। गद्य लेख जोकि सामजिक और बैंकिंग संबंधी आवश्यक जानकारी प्रदान करते हैं। पत्रिका को पढ़ते समय मैंने प्रत्येक पन्ने के नीचे दिए गए रुचिकर उद्धरण व संदेश भी देखे जो समाज और जीवन की नैतिकता सिखाते हैं। इसके लिए प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग का प्रत्येक सदस्य बधाई के पात्र हैं। मेरी तरफ से संपादक मंडल को मंगलकामनाएं। मैं, "राजभाषा अंकुर" के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

जय हिंद !

–विनय खंडेलवाल
आंचलिक प्रबंधक, लखनऊ

आपके बैंक की हिंदी पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' का मार्च 2023 का अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद! पत्रिका में शामिल समस्त लेख, कविताएं अत्यंत ही रोचक, सारगर्भित, ज्ञानवर्द्धक और पठनीय है। साथ ही पत्रिका की साज–सज्जा और प्रस्तुति भी काफी आकर्षक, रमणीय और उच्च कोटि की है।

पत्रिका की विषय–वस्तु में मूल रूप से साहित्यिक से लेकर समसामयिक महत्वपूर्ण विषयों का समावेश किया गया है जो निश्चय ही पाठकों की पाठकीय अभिरूचि का परिष्कार करने के साथ ही साथ उनके समुचित मार्गदर्शन का कार्य करती है। इस दृष्टि से जहां एक ओर डॉ. चरणजीत सिंह जी के 'ढाई आखर प्रेम के' लेख में प्रेम की साहित्यिक, दार्शनिक, मानवीय तथा आध्यात्मिक व्याख्या की गई है वहीं दूसरी ओर अलीमुद्दीन सिद्दीकी जी के 'वर्तमान वैश्विक व्यवस्था और भारत', रीना आर्या जी की 'महिला सशक्तिकरण और स्वयं सहायता समूह' लेख में भारत के महत्वपूर्ण समसामयिक मुद्दों को उठाया गया है और तदनुसार उपयुक्त समाधान भी सुझाए गए है जिससे भारत निरंतर प्रगति की राह पर अग्रसर होता रहे। अंक में शामिल 'बचपन और गांव', 'सहज' जैसी बोधगम्य और अर्थपूर्ण कविताएं भी सहज ही ध्यान आकर्षित करती हैं।

समग्रतः विषय–वस्तु के चयन की उत्कृष्टता और कलात्मक संपादन ने इस अंक को पठनीय के साथ ही साथ संग्रहणीय भी बना दिया है। इस संग्रहणीय अंक के लिए पूरी संपादकीय टीम बधाई की पात्र है। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

–संतोषी शर्मा
प्रबंधक (राजभाषा), आईडीबीआई बैंक, मुंबई

आपके विभाग की प्रतिष्ठित पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' के नवीनतम अंक की प्रति प्राप्त हुई। बहुत–बहुत धन्यवाद! मैंने पूरी पत्रिका पढ़ी है। संपादकीय में बिलकुल सही कहा गया है कि अच्छा लेखन, व्यक्तित्व को निखारने के साथ–साथ भावों को अंतर्मन से निकालकर भौतिक जगत से साक्षात्कार कराने का कार्य भी करता है। श्री अलीमुद्दीन सिद्दीकी के लेख 'वर्तमान वैश्विक व्यवस्था और भारत' में अनेक देशों के विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से भारत की प्रगतिशील अर्थव्यवस्था का बड़ी ही सुंदरता से वर्णन किया गया है। 'अपनों में बेगानी' नामक अपने संवेदनशील और रुचिकर संस्मरण में डॉ. कुलवंत सिंह शेहरी ने राजभाषा हिंदी को वास्तविकता के धरातल पर उतारने का सुंदर प्रयास किया है। अपने ज्ञानवर्धक लेख 'मानव जीवन एवं संगीत' में संगीत का महत्व बताते हुए श्री रूप कुमार ने ठीक ही लिखा है कि जीवन में शब्दों की प्रखरता से कहीं अधिक गहराई संगीत के सुर की होती है। रीना आर्य का 'महिला सशक्तिकरण और स्वयं सहायता समूह', अमित मोहन का 'कार्यस्थल पर असंतोष व निराशा का प्रबंधन' और पत्रिका के अन्य लेख भी अच्छे व जानकारीपरक लगे। काव्य मंजूषा में भी उत्कृष्ठ कविताएं भी पढ़ने को मिलीं।

यह बधाई की बात है कि अखिल भारती राजभाषा सम्मेलन हेतु प्रकाशित प्रतिष्ठित स्मारिका में सुश्री 'भारती' के लेख को प्रकाशित किया गया है। इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए पत्रिका के संपादक मंडल का हर सदस्य बधाई का पात्र है।

–राजिंदर सिंह बेवली
सेवानिवृत्त सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादकीय

सुधी पाठकगण,

'राजभाषा अंकुर' के जून 2023 अंक के साथ मैं पुनः आपके समक्ष उपस्थित हूँ। हमारा निरंतर प्रयास रहा है कि पत्रिका को और उत्कृष्ट बनाया जाए। आपकी ओर से निरंतर मिल रही प्रतिक्रिया एवं सुझाव, पत्रिका के साथ आपके जुड़ाव को प्रमाणित करते हैं।

24 जून, 2023 को बैंक ने अपना गौरवपूर्ण 116वाँ स्थापना दिवस मनाया है। ग्राहकों को बेहतर सेवाएं प्रदान करने के लिए बैंक, निरंतर प्रयासरत है। **डॉ. भाई वीर सिंह जी, सर सुंदर सिंह मजीठिया जी और सरदार तरलोचन सिंह जी** ने समाज के निम्न वर्ग के सामाजिक और आर्थिक उत्थान के जिस उद्देश्य से 24 जून, 1908 में इस बैंक की स्थापना की थी, उसी उद्देश्य को केंद्र में रखकर बैंक आज भी नित नई तकनीकों, उत्पादों और सेवाओं के साथ देश सेवा में अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहा है। अपने प्रथम स्थापना वर्ष से लेकर अभी तक बैंक ने अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए विभिन्न मानक स्थापित किए हैं और इसी क्रम में बैंक ने वित्त वर्ष 2022–23 में अब तक का सर्वाधिक शुद्ध लाभ दर्ज किया है।

हाल ही में बैंक के नए कॉरपोरेट कार्यालय का परिचालन एनबीसीसी कॉम्प्लेक्स, पूर्वी किदवई नगर, नई दिल्ली में प्रारंभ किया गया है जिसका उद्घाटन माननीय केंद्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट कार्य मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारामन के कर कमलों से हुआ। इस अवसर पर डॉ. भागवत किशनराव कराड, माननीय राज्य मंत्री (वित्त) और डॉ. म. प्र. तन्गीराला, अपर सचिव, वित्तीय सेवाएं विभाग भी उपस्थित रहे। यह निश्चित तौर पर बैंक के लिए गर्व का क्षण रहा। अपने पद चिह्नों का विस्तार करते हुए बैंक, निरंतर देश के विभिन्न राज्यों में अपनी शाखाएं खोल रहा है जिसका उद्देश्य न केवल लाभार्जन वरन देश का समावेशी विकास है। सीमावर्ती शाखा करीमगंज (असम राज्य) का उद्घाटन माननीय केंद्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट कार्य मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारामन के कर कमलों से होने पर बैंक, गौरवान्वित अनुभव कर रहा है।

पत्रिका के इस अंक में राजभाषा हिंदी के क्रियान्वयन के साथ–साथ विभिन्न विषयों को समाहित किया गया है। हाल ही में संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति ने बैंक के अनेक कार्यालयों का राजभाषा निरीक्षण किया है जिसकी झलक पत्रिका के अनेक पृष्ठ पर आपको देखने मिलेगी। काव्य–मंजूषा, कार्टून–कोना और ज़रा सोचिए जैसे स्तंभ पत्रिका में शोभायमान है। आपसे अपेक्षा है कि पत्रिका के विषय में अपने बहुमूल्य विचारों तथा सुझावों से अवगत कराकर पत्रिका को अपना स्नेह प्रदान करेंगे।

(गजराज देवी सिंह ठाकुर)
महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी

के. पी. तिवारी

बैंकों में हिंदी अनुवाद के दौरान बरती जाने वाली सावधानियाँ

आज के कारोबारी युग में लगभग प्रत्येक संस्था में अनुवाद एक आवश्यकता सा प्रतीत होने लगा है। खासकर ऐसी संस्थाओं में जिन्हें आम जनता के साथ कारोबार करना होता है। बैंक भी ऐसी ही संस्थाओं में से एक है जिसे अपने कारोबार के सिलसिले में ग्राहक के अनुसार भाषा का प्रयोग करना ही पड़ता है। ऐसे में अनुवाद की जरूरत पड़ती है। एक बात यह भी है कि अनुवाद को लेकर हमारा परिचय केवल सरकारी कार्यालयों, बैंकों आदि में हो रहे अनुवाद से ही है। साहित्य, विज्ञान, दर्शन, विज्ञापन, चलचित्रों आदि के लिए जो अनुवाद होते हैं, उनसे हम केवल छवियों और अभिनय के माध्यम से जुड़ते हैं। ऐसे में भाषा को लेकर कोई विशेष सजगता नहीं रहती है। बैंकों में अनुवाद करते समय क्या कुछ सावधानियां अपनाई जा सकती हैं, इस लेख में इसी बारे में चर्चा की गई है।

मानव सभ्यता में अनुवाद का अपना अलग ही महत्त्व है। ज्ञान–विज्ञान के प्रसार, विभिन्न संस्कृतियों से परिचय कराने, विचारों के संप्रेषण आदि में अनुवाद ने महती भूमिका निभाई है और आज भी यह कार्य निरंतर हो रहा है। हमारे देश में अनुवाद को बहुत गंभीरता से नहीं लिया जाता है, बल्कि यह मान लिया गया है कि जो भी व्यक्ति दो भाषाएं जानता है वह अनुवाद भी कर लेगा लेकिन क्या वास्तव में ऐसा होता है – यह विचारणीय है।

अंग्रेजी से हिंदी में सहजता से अनुवाद करने के लिए एक सामान्य सा सूत्र है – भाषा और विषय दोनों का सम्यक ज्ञान। दो भाषाओं के व्याकरण का ज्ञान, अनुवादक के लिए पहली अनिवार्यता है। इसके बाद विषय और फिर पाठक समूह को ध्यान में रखते हुए अनुवादक को शब्द चयन, वाक्य रचना सभी पर ध्यान देना होता है। सर्वोत्तम स्थिति तो यही होती कि सभी भाषाओं में निकटतम समानार्थी होते और प्रत्येक शब्द का केवल एक ही अर्थ होता लेकिन वास्तविक जगत में ऐसा होता नहीं है। कुछ ऐसे भी शब्द हैं, संदर्भ और विषय के अनुसार जिनके एक से अधिक अर्थ होते हैं। शब्द ही नहीं कई बार तो वाक्य के भी एक से अधिक अर्थ प्रतीत होते हैं। हालांकि ऐसे अवसर बहुत कम आते हैं, पर जब आते हैं तो हास्यास्पद स्थिति पैदा हो जाती है। बहुअर्थी होने की यह स्थिति वाक्यों के साथ कम लेकिन शब्दों के साथ अधिक बनती है। अलग–अलग अर्थ होने की संभावना वाले अंग्रेजी और हिंदी में समानार्थी शब्दों के प्रति सजग रहना चाहिए। एक उदाहरण देखिए :

साधारण पत्रों, रिपोर्टों, प्रलेखों आदि में यह समस्या नहीं आती है लेकिन बैंकों की तरफ से भेजे जाने वाले एसएमएस में यह समस्या आ सकती है। वहां शब्दों की संख्या ही नहीं बल्कि कम–से–कम शब्दों में अर्थ की सटीकता का भी ध्यान रखना होता है। यह भी ध्यान रखना होता है कि इन संदेशों को प्राप्त करने वाले व्यक्ति अर्थात पाठक वर्ग उस संदेश को भली प्रकार से समझ सकें।

(A) You must not use abrasive cleaners on the machine casing.

(B) The use of abrasive cleaners on the machine casing is not recommended.

अब उक्त दोनों वाक्यों का हिंदी अनुवाद करते समय यह देखा जा सकता है कि पहले वाक्य में 'use' का प्रयोग 'क्रियापद' के रूप में हुआ है तो दूसरे में इसी 'use' शब्द का प्रयोग 'संज्ञापद' के रूप में हुआ है। अब ज़रा निम्नलिखित वाक्य का हिंदी अनुवाद देखिए :

Cleaning fluids can be dangerous.

यहां 'Cleaning' का अर्थ 'क्रियापद' के रूप में नहीं लेना है बल्कि 'क्रियावाचक' के रूप में ही लेना होगा। सफाई में काम आने वाले तरल पदार्थ खतरनाक हो सकते है; न कि यह तरल पदार्थों को धोना खतरनाक हो सकता है।

शब्दों या वाक्यों में अनेकार्थकता का एक अन्य कारण भी हो सकता है और वह है समूचा पदबंध, विशेषकर prepositional पदबंध। कुछ

पूर्वसर्गिक पदबंध एक ही वाक्य में एकाधिक संबद्धता दिखा सकते हैं। निम्नलिखित वाक्य में Postscript interface के साथ जो prepositional पदबंध with है वह प्रिंटर और वर्ड प्रोसेसर दोनों ही के साथ अर्थ की प्रतीति करा सकता है। यदि अनुवादक को यह ध्यान रहे कि पोस्ट स्क्रिप्ट इंटरफेस किसी प्रकार का हार्डवेयर नहीं होता है, बल्कि यह सॉफ्टवेयर का ही एक अंश होता है जो प्रिंटर और कंप्यूटर के बीच सहबद्धता करता है।

Connect the printer to a word processor package with a Postscript interface.

ऐसी ही सावधानी इस वाक्य में भी अपेक्षित है :

You will require a printer and a word processor with Postscript interfaces.

सर्वनामों का उचित संबंध

इसी प्रकार सर्वनामों के संबंध जोड़ने में भी वास्तविक जगत को ध्यान में रखना होता है –

Put the paper in the printer. Then switch it on.

यह तो सामान्य सी बात है कि उक्त वाक्य में सर्वनाम का संबंध किस संज्ञा पद के साथ है। इसी प्रकार से **He went to his home** का अनुवाद यदि यह किया जाए कि 'वह उसके घर गया' तो वाक्य में स्पष्टता नहीं होगी। यहां पहले के वाक्यों के आधार पर यह ध्यान रखना होगा कि वह किसी और के घर गया है या वह अपने घर गया है।

I went to my home का अनुवाद – मैं मेरे घर गया – यह अनुवाद ही नहीं बल्कि इस प्रकार के वाक्य भी सुनने में मिल सकते हैं। खासकर मुंबई में रहने वाले अनुवादकों के अनुवाद में। जबकि इस वाक्य को होना चाहिए – मैं अपने घर गया। इसके बहुत से उदाहरण हो सकते हैं, जिनके बारे में सावधानी रखनी होती है। इसके लिए पूरे पैरा या कई बार तो संपूर्ण प्रलेख को ध्यान में रखते हुए अनुवाद करना होता है।

सटीक परिणामों और स्वचालित अनुवाद सॉफ्टवेयर : कई बार अनुवाद करते–करते एमएस वर्ड में अनुवाद सॉफ्टवेयर की तरफ से कुछ सुझाव आने लगते हैं। ये सुझाव आपको भ्रमित भी कर सकते हैं। इसका कारण यह भी हो सकता है कि अंग्रेजी के जिन वाक्यों के आधार पर मशीन से अनुवाद करने की सहायता का विकास किया गया है, वे वाक्य बहुधा अंग्रेजी भाषी लेखकों के होते हैं। ऐसे में आप सावधानी रखते हुए ही उन वाक्यों को अपने अनुवाद में शामिल करें, नहीं तो अनुवाद गलत हो जाएगा।

शब्दों की संख्या का ध्यान रखना : कुछ अंग्रेजी शब्दों के लिए हिंदी में कई शब्दों या फिर एक ही हिंदी शब्द की आवश्यकता हो सकती है। साधारण पत्रों, रिपोर्टों, प्रलेखों आदि में यह समस्या नहीं आती है लेकिन बैंकों की तरफ से भेजे जाने वाले एसएमएस में यह समस्या आ सकती है। वहां शब्दों की संख्या ही नहीं बल्कि कम–से–कम शब्दों में अर्थ की सटीकता का भी ध्यान रखना होता है। यह भी ध्यान रखना होता है कि इन संदेशों को प्राप्त करने वाले व्यक्ति अर्थात पाठक वर्ग उस संदेश को भली प्रकार से समझ सकें। आगे जो उदाहरण दिए जा रहे हैं, वह बैंक के अनुसार अलग–अलग हो सकते हैं पर इससे यह समझने में आसानी रहेगी कि पाठक वर्ग को ध्यान में रखते हुए और सीमित शब्दों में अनुवाद करना होगा –

Your account XXXXXXX is credited by ₹ XXXX, Clr Bal : 000000 as on dd/mm/yyyy hr:min xyz bank.

Greetings from --- Your request for debit card has been processed. Dispatch details will be shared soon. For enquiry, please contact branch-___ Bank

ये संदेश हिंदी या भारतीय भाषाओं में तैयार करते समय अनुवाद में सावधानी रखनी होगी।

दो भाषाओं के बीच विराम चिह्नों का ध्यान रखें : हिंदी में पूर्ण विराम के अलावा सभी विराम चिह्न अंग्रेजी से ही लिए गए हैं। कुछ समाचार पत्रों, पत्रिकाओं में पूर्ण विराम के स्थान पर अंग्रेजी की तरह से फुलस्टॉप भी देखने को मिल सकते हैं। एसएमएस में आवश्यकता के अनुसार पूर्ण विराम के स्थान पर फुलस्टॉप का प्रयोग करना पड़ सकता है ताकि '1' और 'I' में भ्रम नहीं हो। मान लीजिए किसी रकम या तारीख के बाद (.) का प्रयोग हुआ है, और अनुवाद करते समय हिंदी के वाक्य में भी अंत में कोई रकम या तारीख लिखी गई है तो वहां (।) का प्रयोग करने से पाठक को 1 का भ्रम हो सकता है।

अधिकाधिक हिंदी रचनाएं पढ़ें : नए शब्दों, अभिव्यक्तियों, उपभाषाओं और मुहावरों के प्रयोग जानने के लिए अधिकाधिक हिंदी रचनाएं पढ़नी चाहिए। जिस प्रकार से एक अच्छा लेखक अच्छा पाठक भी होता है, उसी प्रकार से अनुवादक को भी नई– नई रचनाएं, लेख, पुस्तकें अवश्य पढ़नी चाहिए। अनुवादक के लिए दोनों ही भाषाओं पर ध्यान देना आवश्यक है इसलिए उसे अंग्रेजी और हिंदी दोनों ही भाषाओं की रचनाएं पढ़नी चाहिए। इससे उसे नए शब्द प्रयोगों, नवीन संकल्पनाओं, विषयों के अनुसार शब्द प्रयोगों की जानकारी मिलेगी और अनुवाद में आसानी रहेगी। अनुवाद करते समय ही एक शब्दावली भी तैयार कर लेनी चाहिए जो भविष्य के अनुवादों में काम आएगी। यह अन्य अनुवादकों के लिए भी उपयोगी हो सकती है।

अपना अनुवाद पढ़ना : यदि पुनरीक्षण करने वाला कोई नहीं है और यदि है तो भी अनुवाद में भाषा, वाक्य रचना, वर्तनी आदि की सटीकता सुनिश्चित करने के लिए अनुवादक को चाहिए कि अपने अनुवाद कम–से–कम दो बार अवश्य पढ़े। इससे वाक्यों के दोषों को दूर करते हुए भाषा को सही और सुबोध बनाया जा सकेगा।

अनुवाद को साझा करना : अनुवादक को चाहिए कि अन्य अनुवादकों के साथ अपने अनुभवों और अनुवाद गुणवत्ता को सुधारने के लिए आपस में चर्चा अवश्य करें। इससे अनुवादक को नए विषयों का भी ज्ञान होता रहेगा और यदि कहीं कोई त्रुटि है तो उस पर भी ध्यान जाएगा।

अनुवाद विधियाँ या प्रक्रिया :

1. सबसे पहले तो यदि समय हो तो अनुवाद की जाने वाली सामग्री को पूरा पढ़ कर समझ लेना चाहिए। यह अनुवाद प्रक्रिया का प्रथम चरण है।
2. यदि अपरिचित विषय है तो उसके बारे में जानकारी अवश्य प्राप्त करनी चाहिए।
3. कार्यालय में या किसी विषय के लिए उपलब्ध शब्दावली का प्रयोग अवश्य किया जाए।
4. शब्दकोशों को देखने में विलंब नहीं करना चाहिए। आज तो ऑनलाइन शब्दकोश भी उपलब्ध हैं और इसलिए शब्दों को तलाशने में देर नहीं लगती है। संदर्भ देखने के लिए भी ऑनलाइन सुविधाएं हैं।
5. कम्प्यूटर की सहायता से अनुवाद करने हेतु पहली शर्त यही है कि संबंधित साइट के लिए कार्यालय की तरफ कोई प्रतिबंध नहीं हो लेकिन निजी लैपटॉप या घर पर इन सुविधाओं का उपयोग हो सकता है –

   क. ''समीक्षा'' टैब में उपलब्ध एमएस वर्ड की बिल्ट–इन अनुवाद सुविधा का उपयोग किया जा सकता है।

   ख. माइक्रोसॉफ्ट ट्रांसलेटर ऐप या गूगल ट्रांसलेटर ऐप डाउनलोड करके ऑफ़लाइन अनुवाद के लिए ऑफ़लाइन भाषा पैक इंस्टॉल करना होता है (मोबाइल फोन हेतु)।

उक्त चर्चा में अनुवाद की समस्याओं और प्रक्रिया के बारे में कुछ जानकारी देने का प्रयास किया गया है। वैसे तो अनुवाद अपने आप में एक जटिल प्रक्रिया और कार्य होता है। इसमें अनुवादक को भाषा, परिस्थिति के साथ–साथ संप्रेषणीयता पर ध्यान रखते हुए कार्य करना होता है। अनुवादक जितना अभ्यास करेगा – अनुवाद में उतना ही निखार आता जाएगा।

–सेवानिवृत्त उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय रिज़र्व बैंक, मुंबई

विश्वास वह पक्षी है जो प्रभात के पूर्व अंधकार में ही प्रकाश का अनुभव करता है और गाने लगता है – रवींद्रनाथ ठाकुर।

ग्राहक के मुख से

बैंक ने देश के सीमावर्ती राज्य असम के करीमगंज जिले में अपनी 1553वीं शाखा आरंभ की। करीमगंज, बांग्लादेश सीमा से महज दो किमी की दूरी पर स्थित है। शाखा का उद्घाटन माननीय केंद्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट कार्य मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारामन के कर कमलों द्वारा वर्चुअल रूप से किया गया। उद्घाटन के दौरान करीमगंज शाखा में क्षेत्र महाप्रबंधक चंडीगढ़ श्री चमन लाल शींहमार, आंचलिक प्रबंधक गुवाहाटी श्री लालरेमथांग हमार तथा शाखा प्रबंधक करीमगंज मो. फारूख आलम उपस्थित रहे। इस दौरान श्री जगदीश चंद्र बनिक (सचिव, करीमगंज चैंबर्स ऑफ़ कॉमर्स) सहित अन्य भावी बैंक ग्राहकों ने माननीय केंद्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट कार्य मंत्री से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बातचीत की और इस दूरस्थ क्षेत्र में बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए बैंक का आभार व्यक्त किया। ग्राहकों ने अपेक्षा जताई कि आने वाले समय में बैंक के माध्यम से उन्हें सामाजिक सुरक्षा, सुकन्या समृद्धि योजना, लोक भविष्य निधि खाते, व्हाट्सएप बैंकिंग, 24 घंटे एटीएम जैसी मूलभूत सुविधाएं प्राप्त होगीं। शाखा उद्घाटन के पहले दिन ही बैंक को खाते खोलने के लिए 1800 से अधिक आवेदन प्राप्त हुए। अंत में ग्राहकों ने बैंक को इतने बड़े स्तर पर शाखा करीमगंज की शुरुआत करने के लिए बधाई दी।

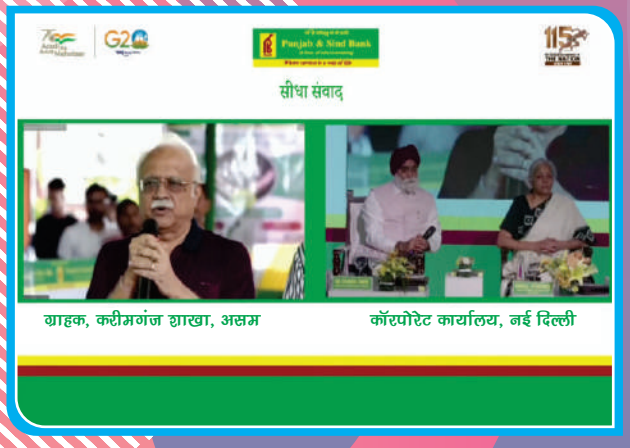

करीमगंज शाखा, असम

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति का रायपुर (छत्तीसगढ़) दौरा

24 मई, 2023 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति ने बैंक की शाखा के के रोड रायपुर (छत्तीसगढ़) का राजभाषाई निरीक्षण किया। इसमें बैंक की ओर से महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री गजराज देवी सिंह ठाकुर, आंचलिक प्रबंधक भोपाल श्री अवधेश नरायन सिंह, प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग में पदस्थ मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री निखिल शर्मा तथा आंचलिक कार्यालय भोपाल में पदस्थ राजभाषा अधिकारी सुश्री नैंसी प्रसाद उपस्थित रहीं। निरीक्षण के दौरान माननीय सदस्यों ने शाखा के राजभाषा कार्यान्वयन पर संतोष व्यक्त किया तथापि बेहतर परिणामों के लिए यथोचित निर्देश दिए।

निरीक्षण कार्यक्रम में माननीय सदस्यों के कर कमलों से बैंक की हिंदी तिमाही पत्रिका "राजभाषा अंकुर" के मार्च–2023 अंक का विमोचन किया गया। सदस्यों ने बैंक पत्रिका के साज–सज्जा तथा आवरण पृष्ठ की प्रशंसा की।

शिष्टता की कोई कीमत नहीं होती परंतु वह खरीद सबकुछ लेती है – स्वामी विवेकानंद।

अमित मोहन अस्थाना

शून्य कार्बन उत्सर्जन की ओर भारत के बढ़ते कदम

तेज आर्थिक विकास अक्सर पर्यावरण की कीमत पर हासिल किया जाता है। घटते प्राकृतिक संसाधन, खराब पर्यावरण और व्यापक प्रदूषण सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए खतरनाक हैं और स्थायी आर्थिक विकास के लिए बड़ी चुनौतियां हैं। जलवायु परिवर्तन पर अंतर गोवर्मेंट पैनल की छठवीं समीक्षा रिपोर्ट में यह बताया गया कि जल्द ही कुछ न किया गया तो तापमान वृद्धि के भीषण परिणाम सामने आएंगे।

"शून्य कार्बन" का मतलब एक ऐसी व्यवस्था तैयार करना है जिसमें कार्बन उत्सर्जन का स्तर लगभग शून्य हो।

ग्लोबल वार्मिंग को लेकर दुनियाभर में चिंताए जताई जा रही हैं। कई देशों ने एक तय समय में खुद को नेट शून्य कार्बन उत्सर्जन करने वाला देश बनाने की घोषणा भी की है और भारत ने इस पहल में खुद को आगे रखते हुए साल 2070 तक शून्य कार्बन उत्सर्जन करने का रोडमैप भी तैयार कर दिया है। ऐसा करने वाला वह दक्षिण एशिया का प्रमुख देश बन गया है। भारत ने इसके लिए करोड़ों लोगों के घर में ऊर्जा, पानी, हवा, कचरा और हरित स्थल से लेकर परिवहन तक तमाम पहलुओं के प्रबंधन के लिए व्यापक प्रस्ताव बनाए हैं। इसी पहल में भारत की आर्थिक राजधानी मुंबई ने खुद को 2050 तक शून्य कार्बन उत्सर्जन वाला शहर बनने की घोषणा की है। मुंबई भारत के अमीर शहरों में शुमार है। यहां गरीबी और झुग्गी बस्तियां भी बड़े स्तर पर मौजूद हैं। यहां पर कई गांव मछली के व्यवसाय पर निर्भर हैं। ऐसे में साल 2050 तक समुद्र का स्तर बढ़ने से शहर के कई हिस्सों में बाढ़ का खतरा और बढ़ जाएगा जिससे आने वाले वक्त में इस शहर को करीब 92 करोड़ डॉलर का नुकसान होगा। इसी प्रकार से अन्य शहरों व क्षेत्रों में भी समस्याएं देखी जा रही हैं जैसे गुरुग्राम में प्रति व्यक्ति पर सिर्फ 25 प्रतिशत पानी का स्तर सीमित रह गया है इसलिए पानी का सही मात्रा में उपयोग आवश्यक हो गया है ताकि भविष्य में इसकी पूर्ति की जा सके। जलवायु परिवर्तन किस कदर तेजी से हो रहा है, इसे ऐसे समझा जा सकता है कि अप्रैल में ही गुरुग्राम में तापमान 48 डिग्री सेल्सियस पहुंच जाता है। जलवायु परिवर्तन के लिए कार्बन उत्सर्जन की जिम्मेदारी समझते हुए कम से कम कार्बन उत्सर्जन करने वाली जीवनशैली अपनानी होगी। यहाँ भी 2050 तक शहर को कार्बन उत्सर्जन के मामले में शून्य पर लाने का लक्ष्य रखा गया है। इसके तहत एक्शन प्लान बनाने के लिए इस क्षेत्र के विशेषज्ञ मदद करेंगे। गुरुग्राम जिले में सबसे अधिक कार्बन फुटप्रिंट हैं जो राष्ट्रीय औसत का चार गुना है और उच्च स्तर का कार्बन उत्सर्जन है। यहाँ शून्य कार्बन को हासिल करने के लिए बड़े पैमाने पर वनीकरण, पौधारोपण, हरित आवरण का निर्माण सहित अन्य अक्षय और टिकाऊ ऊर्जा का समर्थन करने वाले व्यावहारिक आदतों को अपनाना पड़ेगा जिससे कार्बन फूट प्रिंट को जीरो कर सकें। कमोबेश सभी शहरों में यही स्थिति है।

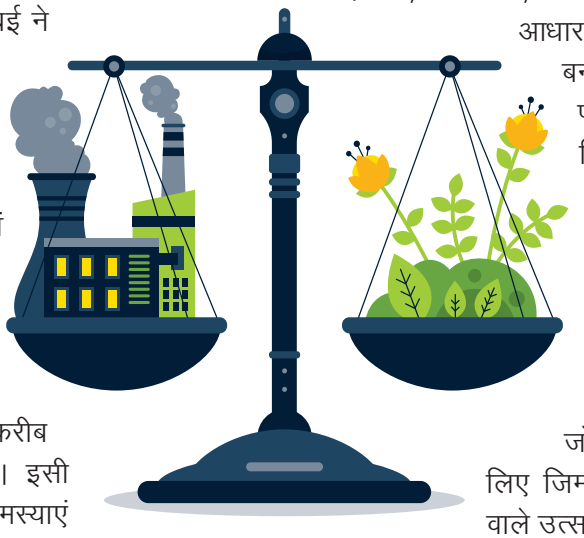

दफ्तरों, नागरिकों, शोधार्थियों और कंपनियों से मिली सलाहों के आधार पर करीब छह क्षेत्रों में बदलाव की एक सूची बनाई है। इसमें घरों में निवेश, सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा और लोगों के चलने के लिए ज्यादा सड़क, बाढ़ से बचाने वाले ड्रेनेज सिस्टम और जल संरक्षण पर बल दिया जाएगा, इसके लिए ग्रीन बॉन्ड के जरिए पैसा जुटाने की घोषणा भी शामिल है तथा राज्य एवं संघीय सरकार सहित वैश्विक स्तर पर भी धन जुटाने की योजना है। ज्यादा निवेश ऊर्जा के क्षेत्र में किया जाएगा जो होने वाले कुल उत्सर्जन में 72 फीसदी के लिए जिम्मेदार है। इसमें वाहनों और कचरे से होने वाले उत्सर्जन भी शामिल हैं। आने वाले तीन दशकों में

लक्ष्य है कि कुल ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन शून्य किया जाए। फिलहाल साल 2020 के आंकड़ों के मुताबिक भारत का प्रति व्यक्ति ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन 2.4t के करीब है जो विश्व औसत 6.3t प्रति व्यक्ति से काफी कम है। उल्लेखनीय है कि भारत का एतिहासिक संचयी उत्सर्जन विश्व के कुल उत्सर्जन का मात्र 4.37% है। नागरिकों से अपेक्षा है कि इस प्रयास को सफल करने के लिए वो कम कार्बन उत्सर्जन करने वाली जीवनशैली अपनाए। ग्लोबल वार्मिंग, लगातार बाढ़ एवं आग की समस्या, कोविड–19 महामारी और कई अन्य समस्याओं से पीड़ित हमारी पृथ्वी अस्तित्वगत संकट से गुजर रही है और मानवता के भविष्य को सुरक्षित रखने के लिये वैज्ञानिक और अभिनव उपायों की तत्काल आवश्यकता रखती है।

इस संदर्भ में भारत ने जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेशन (UNFCCC) के COP–26 में अपनी वर्धित जलवायु प्रतिबद्धताओं 'पंचामृत' की घोषणा की, जिसमें वर्ष 2070 तक निवल –शून्य कार्बन उत्सर्जन (Net-Zero Carbon Emission) तक पहुँचने की प्रतिबद्धता शामिल है। भारत द्वारा निवल–शून्य लक्ष्य की घोषणा करना इस दृष्टिकोण से एक बड़ा कदम है क्योंकि वह ग्लोबल वार्मिंग के प्रमुख योगदानकर्ताओं में से एक नहीं है फिर भी एक स्वैच्छिक दायित्व–बोध से आगे बढ़ा है। इस घोषणा के बाद वर्ष 2070 के अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये भारत को विशेष रूप से एक सुगम नवीकरणीय ऊर्जा संक्रमण, इलेक्ट्रिक वाहनों के अधिकाधिक अंगीकरण और सार्वजनिक क्षेत्र के साथ–साथ निजी क्षेत्र की वृहत भागीदारी पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता होगी।

भारत के नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्य : भारत के नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्य लगातार अधिक महत्त्वाकांक्षी होते गए हैं। जहाँ पेरिस में वर्ष 2022 तक 175 GW प्राप्त कर लेने की घोषणा से आगे बढ़ते हुए उसने संयुक्त राष्ट्र जलवायु शिखर सम्मेलन में वर्ष 2030 तक 450 GW और अब COP26 में वर्ष 2030 तक 500 GW क्षमता प्राप्त कर लेने के लक्ष्य की घोषणा की है।

- भारत ने वर्ष 2030 तक गैर–जीवाश्म ऊर्जा स्रोतों से 50% स्थापित बिजली उत्पादन क्षमता के लक्ष्य की भी घोषणा की है जो 40% के मौजूदा लक्ष्य का विस्तार करता है और जिसे पहले ही लगभग हासिल कर लिया गया है।
- भारत ने 'ग्रे हाइड्रोजन' और 'ग्रीन हाइड्रोजन' के लिये हाइड्रोजन ऊर्जा अभियान (Hydrogen Energy Mission) की भी घोषणा की है।
- ऊर्जा दक्षता के मामले में 'कार्य–निष्पादन, उपलब्धि और व्यापार' (Perform Achieve and Trade-PAT) की बाजार–आधारित योजना ने अपने पहले और दूसरे चक्र के दौरान 92 मिलियन टन CO2 समकक्ष उत्सर्जन को कम करने में सफलता पाई है।

परिवहन क्षेत्र में सुधार: भारत 'फेम' योजना [Faster Adoption and Manufacturing of (Hybrid &) Electric Vehicles Scheme] के साथ अपने ई–मोबिलिटी रूपांतरण में गति ला रहा है।

- भारत ने भारत स्टेज– IV (BS-IV) से तेजी से आगे बढ़ते हुए भारत स्टेज–VI (BS-VI) उत्सर्जन मानदंड को 1 अप्रैल, 2020 तक अपनाए जाने की घोषणा की (जिसे मूल रूप से वर्ष 2024 तक अपनाया जाना है)।
- पुराने और अयोग्य वाहनों को चरणबद्ध रूप से हटाने के लिये एक स्वैच्छिक 'व्हीकल स्क्रैपिंग पॉलिसी' अपनाई गई है जो मौजूदा योजनाओं को पूरकता प्रदान करती है।
- भारतीय रेलवे भी इस दिशा आगे बढ़ी है, जहाँ वर्ष 2023 तक सभी ब्रॉड गेज रूट्स के पूर्ण विद्युतीकरण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

इलेक्ट्रिक वाहनों को भारत का समर्थन: भारत उन गिने–चुने देशों में शामिल है जो वैश्विक EV30@30 अभियान का समर्थन करते हैं। इसका लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि वर्ष 2030 तक बिक्री किए जाने वाले नए वाहनों में कम–से–कम 30% वाहन इलेक्ट्रिक हों। ग्लासगो में आयोजित COP26 में जलवायु परिवर्तन के संबंध में पाँच तत्वों (जिसे 'पंचामृत' नाम दिया दिया है) की भारत द्वारा वकालत इसी दिशा में जताई गई प्रतिबद्धता है। भारत ने इलेक्ट्रिक वाहन पारितंत्र को विकसित करने और बढ़ावा देने के लिये कई उपाय किए हैं जैसे :

- फेम योजना में सुधार के साथ 'FAME-II' (Faster Adoption and Manufacturing of Electric Vehicles- II) योजना का कार्यान्वयन।
- आपूर्तिकर्ता पक्ष हेतु उन्नत रसायन सेल (ACC) के लिये उत्पादन–लिंक्ड प्रोत्साहन (PLI) योजना।
- इलेक्ट्रिक वाहनों के निर्माताओं के लिये हाल ही में शुरू की गई 'ऑटो और ऑटोमोटिव घटकों के लिये पीएलआई योजना'।

सरकारी योजनाओं की भूमिका :

- प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना ने 88 करोड़ परिवारों को कोयला–आधारित रसोई ईंधन से एलपीजी गैस कनेक्शन की ओर आगे बढ़ने में मदद की है।
- उजाला योजना के तहत 367 मिलियन से अधिक एलईडी बल्ब वितरित किये गए हैं जिससे प्रतिवर्ष 38.6 मिलियन टन CO_2 की कमी हुई है।

इन दो और ऐसी अन्य पहलों ने भारत को वर्ष 2005 और वर्ष 2016

के बीच अपने सकल घरेलू उत्पाद की उत्सर्जन तीव्रता में 24% की कमी लाने में मदद की है।

निम्न-कार्बन संक्रमण में उद्योगों की भूमिका: भारत में सार्वजनिक और निजी क्षेत्र पहले से ही जलवायु चुनौती से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, जहाँ ग्राहकों और निवेशकों की बढ़ती जागरूकता के साथ–साथ बढ़ती नियामक और प्रकटीकरण आवश्यकताओं से सहायता मिल रही है। उदाहरण के लिए भारतीय सीमेंट उद्योग ने अग्रणी उपाय किये हैं और विश्व स्तर पर सर्वाधिक क्षेत्रवार निम्न–कार्बन स्तर पर पहुँचने की अभूतपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। भारत की जलवायु नीति का इसके निजी क्षेत्र के कार्यों और प्रतिबद्धताओं के साथ अधिकाधिक तालमेल हुआ है।

संबंद्ध चुनौतियां :

➢ **नवीकरणीय ऊर्जा की ओर सुगम ट्रांजिशन की बाधाएं :**

- ✓ नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता वाली भूमि की पहचान और भूमि मंजूरी की अधिक समय लेने वाली प्रक्रियाएं।
- ✓ ग्रिड के साथ नवीकरणीय ऊर्जा के एक बड़े हिस्सा को एकीकृत करना एक अन्य अवरोध है।
- ✓ तथाकथित डीकार्बोनाइजेशन हेतु कठिन (Hard to Decarbonize) क्षेत्रों में नवीकरणीय ऊर्जा के प्रवेश को सक्षम करने में भी चुनौतियां सामने आ सकती हैं।

➢ **कोयला-संचालित कंपनियों के लिए चुनौतियां :** सेवा क्षेत्र में कार्यरत कंपनियों के लिये कोयले से गैर–जीवाश्म ईंधन आधारित बिजली उत्पादन/परिवहन की ओर ट्रांजिशन/अवस्थांतर अपेक्षाकृत आसान होता है लेकिन निम्न–कार्बन ट्रांजिशन की ओर बढ़ना उन कंपनियों के लिये अत्यधिक चुनौतीपूर्ण है जो बड़े पैमाने पर कोयले से संचालित हैं और देश के आधे से अधिक उत्सर्जन में योगदान करती हैं।

➢ **ईवी क्षेत्र के लिए चुनौतियां :**

- ✓ प्रौद्योगिकी और कुशल श्रम की कमी। भारत बैट्री, सेमीकंडक्टर्स, कंट्रोलर जैसे इलेक्ट्रॉनिक्स के उत्पादन में तकनीकी रूप से पिछड़ा हुआ है।
- ✓ इलेक्ट्रिक वाहनों की सर्विसिंग लागत अधिक होती है जिसके लिये उच्च स्तर के कौशल की आवश्यकता होती है। भारत में ऐसे कौशल विकास के लिये समर्पित प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का अभाव है।
- ✓ वर्ष 2018 में भारत में केवल 650 चार्जिंग स्टेशन मौजूद थे जो मार्च 2022 तक मात्र 1742 हो पाए , जो पड़ोसी समकक्ष देशों की तुलना में पर्याप्त कम है जहाँ 5 मिलियन से अधिक चार्जिंग स्टेशन संचालित हैं। चार्जिंग स्टेशनों की कमी के कारण उपभोक्ताओं के लिये लंबी दूरी की यात्रा करना अनुपयुक्त हो जाता है।
- ✓ इसके साथ ही एक आम इलेक्ट्रिक कार की लागत पारंपरिक ईंधन से संचालित कार की औसत कीमत से बहुत अधिक है।

आगे की राह :

★ **नवीकरणीय ऊर्जा मिश्रण :** पवन और सूर्य के प्रकाश जैसे स्रोतों की हर जगह चौबीसों घंटे आपूर्ति संभव नहीं है इसलिये सौर, पवन और हाइड्रोजन आधारित ऊर्जा के विविध ऊर्जा मिश्रण की ओर आगे बढ़ना विवेकपूर्ण होगा। भारत का निकट भविष्य में अवसंरचना क्षेत्र में निवेश, क्षमता निर्माण और बेहतर ग्रिड एकीकरण जैसे क्षेत्रों में कार्य जारी है।

★ **निजी क्षेत्र की भागीदारी :** चूँकि उद्योग भी जीएचजी उत्सर्जन में योगदान करते हैं इसलिए किसी भी जलवायु कार्रवाई को औद्योगिक और वाणिज्यिक गतिविधियों से उत्पन्न होने वाले उत्सर्जन को कम करने या समाप्त करने की आवश्यकता होगी। सेवा क्षेत्र में संलग्न कंपनियां नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग का विस्तार कर और आपूर्ति श्रृंखला भागीदारों के साथ सहयोग कर अपने उत्सर्जन को आसानी से कम कर सकती हैं। वे नवीकरणीय स्रोतों से अपनी 50% बिजली की सोर्सिंग कर कार्बन–तटस्थ बन रहे हैं। कोयला–संचालित कंपनियों के लिए यह 'ऊर्जा–ट्रांजिशन मूवमेंट' जलवायु प्रौद्योगिकियों में निवेश करने और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के उपयोग का विस्तार करने का अवसर प्रदान कर रहा है।

★ **इलेक्ट्रिक वाहन को प्रोत्साहन :** ईवी समग्र ऊर्जा सुरक्षा स्थिति में सुधार लाने में योगदान करेंगे क्योंकि देश कच्चे तेल की अपनी कुल आवश्यकता का 80% से अधिक आयात करता है जिसका मूल्य लगभग 100 बिलियन डॉलर है। ईवी की चार्जिंग संबंधी बाधाओं को कम करने के लिये स्थानीय बिजली आपूर्ति तंत्र से बिजली ले सकने वाले चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर निजी आवासों, पेट्रोल एवं सीएनजी पंपों जैसे सार्वजनिक उपयोगिताओं और मॉल, रेलवे स्टेशनों एवं बस डिपो जैसे वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों की पार्किंग सुविधाओं में स्थापित किये जा रहे हैं।

★ **ईवी में अनुसंधान व विकास को बढ़ावा देना :** भारतीय बाजार को स्वदेशी प्रौद्योगिकियों के लिये प्रोत्साहन की आवश्यकता है जो रणनीतिक और आर्थिक दोनों दृष्टिकोण से भारत के अनुकूल हों। चूंकि कीमतों को कम करने के लिये स्थानीय अनुसंधान एवं विकास में निवेश आवश्यक है इसलिए

जीवन संघर्ष में मुझे कोई अवरुद्ध नहीं कर सकता, यदि मैं चाहूँ तो विशाल पर्वत भी मेरी प्रगति में बाधक नहीं बन सकते – मदनमोहन मालवीय।

स्थानीय विश्वविद्यालयों और मौजूदा औद्योगिक केंद्रों का सहयोग लेना उपयुक्त होगा।

हरित वित्त (GREEN FINANCE) : यह तेजी से सार्वजनिक नीति की प्राथमिकता के रूप में उभर रहा है। आर्थिक विकास की स्थिरता पर समग्र चर्चा अब हरित वित्त केंद्रीय है। हरित वित्त उन वित्तीय व्यवस्थाओं को संदर्भित करता है जो पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ परियोजनाओं या जलवायु परिवर्तन के पहलुओं को अपनाने के लिए हैं। एक बार जब निधि, पारंपरिक उद्योगों से मुक्त हो, हरित और पर्यावरण के अनुकूल क्षेत्रों में चला जाता है तो भूमि और श्रम सहित अन्य संसाधनों का भी उचित उपचार किया जा सकता है। यह अंततः संसाधनों के उपयुक्त आबंटन की ओर ले जाता है जो लंबे समय में सतत (sustainable) विकास का समर्थन करता है। भारत में भी वित्तीय संस्थाए हरित वित्त पर कार्य शुरू कर चुकी हैं। सतत हरित वित्त को उन परियोजनाओं और व्यवसाय के लिए प्रावधान पूंजी और जोखिम प्रबंधन उत्पाद के रूप में परिभाषित किया गया है जो आर्थिक समृद्धि, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देते हैं या नुकसान नहीं पहुंचाते हैं, जैसे ;

- ✓ पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ परियोजनाओं में सौर, पवन, बायोगैस आदि जैसे अक्षय स्रोतों से ऊर्जा का उत्पादन शामिल है।
- ✓ स्वच्छ परिवहन जिसमें कम ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन शामिल है।
- ✓ हरित भवन जैसी ऊर्जा दक्ष परियोजनाएं।
- ✓ अपशिष्ट प्रबंधन जिसमें रीसाइक्लिंग, कुशल निपटान और ऊर्जा में रूपांतरण आदि शामिल हैं।

हरित वित्त में निम्न अवयव लिए जा सकते है;

- ✓ **ग्रीन लेंडिंग :** टिकाऊ परियोजनाओं के लिए बैंक ऋण जो पर्यावरण अनुकूलन को प्रोत्साहित करते हो।
- ✓ **ग्रीन बॉन्ड :** ग्रीन बॉन्ड किसी भी संप्रभु संस्था, अंतर–सरकारी समूहों या गठबंधनों और कॉरपोरेट्स द्वारा जारी किए गए बॉन्ड हैं जिसका उद्देश्य है कि बॉन्ड की आय का उपयोग पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ के रूप में वर्गीकृत परियोजनाओं के लिए किया जाता है।

भारत, एशिया–प्रशांत क्षेत्र में ग्रीन बॉन्ड के लिए छठे सबसे बड़े देश के रूप में उभरा है। वर्ष 2021 में जारी किए गए हरित बांड की कुल राशि के संदर्भ में भारत से जारी राशि एक साल पहले की तुलना में 523% बढ़कर संबंधित वर्ष के दौरान $ 6.8 बिलियन हो गया। भारत ने वर्ष 2007 की शुरुआत से ही हरित वित्त पर जोर देना शुरू कर दिया था। दिसंबर 2007 में, रिज़र्व बैंक ने ''कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व, सतत विकास और गैर–वित्तीय रिपोर्टिंग – बैंकों की भूमिका'' नाम से एक अधिसूचना जारी की और ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के महत्व का उल्लेख किया। सतत विकास के संदर्भ में राष्ट्रीय कार्य योजना को, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने के लिए व्यापक नीतिगत ढांचे की रूपरेखा की दृष्टि से तैयार किया गया। जलवायु परिवर्तन वित्त इकाई का गठन वर्ष 2011 में वित्त मंत्रालय ने भारत में हरित वित्त के लिए जिम्मेदार विभिन्न संस्थानों के लिए एक समन्वय एजेंसी के रूप में किया गया है। तत्पश्चात वर्ष 2012 से ही यह एक प्रमुख रणनीतिक कदम है और इसमें स्थिरता प्रकटीकरण आवश्यकताओं का कार्यान्वयन भी शामिल है। भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ने बीएसई और एनएसई में बाजार पूंजीकरण के आधार पर शीर्ष सूचीबद्ध संस्थाओं के लिए इसे प्रकाशित करना अनिवार्य कर दिया है और नियत समय में अन्य संस्थाओ को भी इसे प्रकाशित करना आवश्यक हो जाएगा। इस समय दुनिया, कोविड–19 और वैश्विक आर्थिक विकास पर इसके प्रभाव से उबर रही है। निःसंदेह तत्काल नीतिगत चुनौती, वैश्विक अर्थव्यवस्था को किक–स्टार्ट करना है हालाँकि, महामारी ने सभी हितधारकों को उनकी नीतियों और वित्तीय एवं परिचालन रणनीतियों के बारे में पुनर्विचार करने का अवसर भी प्रदान किया है और एक ऐसे दृष्टिकोण को बल दिया है जो लंबे समय में पर्यावरणीय रूप से अधिक टिकाऊ हो।

निष्कर्षत: यदि तापमान में वृद्धि को पेरिस समझौते की सीमाओं के भीतर रखना है तो भविष्य के संचयी उत्सर्जन को शेष कार्बन बजट तक सीमित करते हुए निवल–शून्य तक पहुंचने हेतु निर्णायक रूप से कार्य करने की आवश्यकता है। इसके लिए अपशिष्ट प्रबंधन नीति, सुरक्षित कार्य पहल, निरंतर सीखने और वैकल्पिक ऊर्जा उपायों को अपनाना होगा। हरित विधियों का उपयोग करके रेड्यूस, रियूज़ और रिसायकल की संकल्पना शून्य कार्बन उत्सर्जन में सहायक होगी तथा यह दक्षता में भी सुधार सुनिश्चित करेगा। भारत इन सभी बिंदुओं पर समग्र रूप से कार्य कर रहा है और शून्य कार्बन अभीष्ट के लिए आशान्वित है।

संकाय सदस्य
स्टाफ प्रशिक्षण महाविद्यालय, रोहिणी, दिल्ली

हिंदी कार्यशाला

आंचलिक कार्यालय नोएडा

आंचलिक कार्यालय चंडीगढ़

आंचलिक कार्यालय पटियाला

आंचलिक कार्यालय गुरदासपुर

आँचलिक कार्यालय फरीदकोट

आँचलिक कार्यालय गुरुग्राम

बच्चों को पालना, उन्हें अच्छे व्यवहार की शिक्षा देना भी सेवाकार्य है क्योंकि यह उनका जीवन सुखी बनाता है
– स्वामी राम सुखदास।

हिंदी कार्यशाला

आंचलिक कार्यालय बरेली

आंचलिक कार्यालय कोलकाता

आंचलिक कार्यालय जयपुर

स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र रोहिणी

आंचलिक कार्यालय पंचकूला

आंचलिक कार्यालय होशियारपुर

कमल रूप सिंह गोइंदी

हमारी बेड़ियां

कुछ समय पहले मुझे रेल में अकेले ही सफर करने का सुअवसर प्राप्त हुआ था। सुअवसर इसलिए क्योंकि इससे पहले मैंने कभी अकेले सफर नहीं किया। चौंकिएगा नहीं, दरअसल इससे पहले थानेदार के रूप में मेरी पत्नी जी हमेशा साथ रहती थीं। थानेदार इसलिए क्योंकि पत्नी जी सफर पर जाते समय हमेशा खाना घर से ही बनाकर ले जाती और स्टेशन से कुछ भी खरीदकर खाने नहीं देती। इसलिए मैंने निश्चय किया कि इस बार मैं यह सफर अपनी मर्जी से करूंगा और घर से कुछ भी लेकर नहीं चलूंगा। प्रत्येक स्टेशन पर उतरूंगा और वहां से कुछ–न–कुछ खरीदकर खाऊंगा भी।

किसी प्रकार मैं अपनी योजना में सफल हो गया और पहली बार बिना खाने के डिब्बे के ट्रेन पर सवार हुआ। मैंने जल्दी से पैंट्रीकार के बैरे को बुलाया और खाने का आर्डर दे डाला। आर्डर देने के बाद मुझे इस प्रकार की खुशी महसूस हुई जैसे क्रिकेट के मैच में छक्का लगने पर दर्शकों को होती है। अभी ट्रेन प्लेटफार्म पर ही थी कि एक किताब बेचने वाला आ गया और मुझे अकेले बैठे देख मेरे सामने किताबों का ढ़ेर लगा दी। उस ढ़ेर में अधिकतर किताबें अंग्रेजी की थीं। मैं ठहरा राजभाषा अधिकारी, जिस पर राजभाषा का भूत हमेशा सवार रहता है। मैं, जो दूसरों को हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित करता रहता हूं, स्वयं अंग्रेजी की पुस्तक किस प्रकार खरीद सकता था। सो, मैंने सरिता नामक एक पत्रिका खरीद ली।

कुछ देर बाद गाडी ने प्लेटफार्म छोड़ दिया। मेरे अलावा वहां 3 यात्री और थे। डिब्बा वातानुकूलित था और ऐसे डिब्बों में बैठे संभ्रांत व्यक्ति यात्रा के दौरान सामान्यतः आपस में बातचीत कम ही करते हैं इसलिए मैंने पत्रिका पढ़ना ही उचित समझा। पत्रिका पढ़ते–पढ़ते मुझे एक पृष्ठ पर "हमारी बेड़ियां" नाम के शीर्षक से एक लेख मिला। उत्सुकतावश मैंने उसे पढ़ना आरंभ कर दिया और पूरा पढ़ने के बाद ही दम लिया। उस शीर्षक में विभिन्न शहरों से लोगों द्वारा भेजे गए अपने–अपने अनुभव लिखे गए थे जिनमें यह कहने का प्रयत्न किया गया था कि हम इस अत्याधुनिक युग में आज भी उतने ही रूढ़िवादी हैं जितने पिछले युग में थे। हम आज भी पुरानी लीकों को छोड़ नहीं पाए हैं चाहे मानव आज चाँद पर पंहुच गया हो। मुझे लगा कि बात तो काफी हद तक ठीक ही है। तभी डिब्बे में कुछ हलचल सी महसूस हुई। मैंने किताब से ध्यान हटाया और देखा कि सामने खाने की ट्रे लिए बैरा खड़ा है। खाना खाते–खाते एक बार फिर से मुझे पत्नी जी की याद आ गई। मेरे मुँह पर एक विजय मुस्कान फैल गई। खाने के बाद मैं ज्यादा देर और न पढ़ सका क्योंकि नींद मुझे अपने आगोश में लेने को बेचैन थी। बिना समय गंवाए मैं सोने के लिए लेट गया। गाडी के हिचकोलों में पता ही नहीं चला कब मेरी आँख लग गई।

सोते–सोते मुझे ऐसा महसूस हुआ कि कोई मुझे उठा रहा है। मैं हड़बड़ा कर उठ बैठा और देखता क्या हूं कि मेरे सामने बेताल बैठा मुस्कुरा रहा है। मुझे ऐसा लगा कि जैसे मैं राजा विक्रमादित्य हूँ और बेताल अभी मुझे अपने कंधों पर उठाएगा और कोई कहानी सुनाएगा लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। वह बोला कि तुम जानते ही हो कि मेरा काम प्रश्न करना और उत्तर प्राप्त करना है। फिर बेताल ने सीधे–सीधे शब्दों में कहना आरंभ किया, मुझे मालूम है कि तुम राजभाषा अधिकारी हो और अपने बैंक के कार्मिकों से हिंदी में काम करने के लिए कहते रहते हो। मैं जानना चाहता हूँ कि क्या तुम्हें लगता है कि कभी ऐसा समय भी आएगा जब हमारे देश के सभी दफ्तरों में सभी काम हिंदी में किया जा सकेगा। मैं जानता हूँ कि तुम इसका उत्तर अवश्य दोगे और तुम्हारे जवाब के बाद मैं गायब भी हो जाऊंगा, यह तुम भी जानते हो।

सर्वसाधारण जनता की उपेक्षा ही एक बड़ा राष्ट्रीय पाप है – स्वामी विवेकानंद।

श्रीमान बेताल जी, आप भी अपनी आदत से मजबूर हैं। आज विक्रमादित्य को छोड़कर मेरे पीछे क्यों पड़ गए हो। इसका उसने कोई उत्तर नहीं दिया। अब मुझे उसके प्रश्न का उत्तर देना था। मैंने कहना शुरू किया, ''तुम जानते ही हो कि हमारा देश काफी वर्षों से अंग्रेजों का गुलाम रहा है। हमारे देश पर उन्होंने लगभग 200 वर्षों तक राज किया है। अभी हमें आजादी मिले केवल 75 वर्ष ही हुए हैं। कुछ समय और बीत जाने दो। हमारी सरकार इस ओर सजग है और काफी तेजी से प्रयत्न भी कर रही है। उसने सभी कार्यालयों तथा बैंकों में राजभाषा के काम के लिए राजभाषा अधिकारियों की नियुक्ति भी करा दी है और वे सभी बड़ी लगन से अपना काम कर रहे हैं।''

भारत में लगभग 70 प्रतिशत लोग अंग्रेजी नहीं बोलते हैं फिर भी यह बड़ी विडंबना है कि हमें अपने दैनिक कार्यों के लिए किसी विदेशी भाषा का सहारा लेना पड़ रहा है। कार्यालयों में राजभाषा अधिकारियों की मदद से आज प्रयोग में आने वाले लगभग सभी कागजातों को द्विभाषी रूप में कर लिया गया है। आज हमें रेलवे द्वारा कंप्यूटर से निकाली जा रही टिकट भी द्विभाषी रूप में प्राप्त हो रही है। बैंकों के लिए भी इस प्रकार के पैकेज तैयार कर लिए गए हैं जिनसे द्विभाषी रूप में आऊटपुट प्राप्त की जा सकती है। यह भी एक विडंबना है कि हिंदुस्तान में जहां लोगों की मातृभाषा हिंदी हो, वहां हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए प्रशासन को विभिन्न प्रोत्साहन योजना चलाने पड़ रहे हैं। देखने में यह भी आया है कि हिंदी का विरोध सबसे अधिक वही लोग करते हैं जिन्हें अंग्रेजी भली प्रकार से नहीं आती है। वह हिंदी में काम धीरे होने तथा गलतियां होने की दुहाई देते हैं लेकिन यह नहीं समझ पाते कि काम तो वही है और करने वाले भी वही हैं। केवल लिपि बदल जाने से काम की गति क्यों कम होगी और क्या वह लोग अंग्रेजी में गलतियां नहीं करते हैं।

अंग्रेजी हमारे मन–मंदिर में इस प्रकार समा गई है कि चौबीसो घंटे हम अंग्रेजी का ही गुणगान करते रहते हैं। हमें लगता है कि यदि हमने अंग्रेजी छोड़ दी तो शायद हमारा जीना ही मुहाल हो जाएगा। जब कभी किसी से हिंदी में काम की बात करो तो झट से वह हिंदी भाषा में त्रुटियां निकालना शुरू कर देता है और अंग्रेजी भाषा को ही सर्वोपरि बताने लगता है। चाहे लोग अंग्रेजी को ही सर्वोपरि मानते हों लेकिन सामान्यतः दफ्तरों में लोग आपस में हिंदी या अपनी मातृभाषा में ही बात करते मिलते हैं। आज भी भारत में बहुत कम लोग हैं जो अंग्रेजी को बोलचाल की भाषा के रूप में प्रयोग करते हैं लेकिन जब लिखने की बात आती है तो वह अंग्रेजी की वक़ालत करने लगते हैं। दफ्तरों में होने वाली बैठकों में भी अधिकतर चर्चा हिंदी/मातृभाषा में ही की जाती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि अपनी भाषा में हम अपनी बात को अधिक स्पष्टता से तथा अच्छी प्रकार से दूसरे को समझा पाते हैं जबकि अंग्रेजी में हम धाराप्रवाह बोल भी नहीं पाते हैं। अंग्रेजी का भूत हिंदुस्तानियों पर इस कदर घर कर गया है कि उन्हें अंग्रेजी के शब्द Psychology, Phenomenon, Cholera, Physics, Colonel, Lieutenant को बोलने तथा लिखने में किसी प्रकार की कठिनाई नज़र नहीं आती। हालांकि जहाँ लिखते समय ऐसे शब्दों की वर्तनी अक्सर गलत होती है वहीं इनके उच्चारण में भी स्पष्टता नहीं होती है लेकिन हिंदी के अवलोकन, अनुपालन, संलग्न और अनुमोदन शब्द उन्हें कठिन लगते हैं।

मैंने कहना जारी रखा 'अंग्रेजी सीखने, पढ़ने तथा बोलने में किसी को कोई आपत्ति नहीं है। हमें अंग्रेजी भाषा भी सीखना चाहिए। सरकार तो केवल इतना चाहती है कि अन्य विकसित देशों की भांति हम भी अपने दैनिक कार्यों में अपनी भाषा अर्थात हिंदी का प्रयोग करें और उसका गौरव बढ़ाएं।'

मैंने महसूस किया कि बेताल मेरी बात बड़ी ध्यान से सुन रहा है। मैंने आगे कहना शुरू किया 'मुझे आशा है कि यदि 75 वर्षों में द्विभाषिकता की स्थिति आ सकती है तो अगले कुछ वर्षों में ऐसी स्थिति भी आ ही जाएगी जब सभी कार्य हिंदी में हो जाएंगें। हम अंग्रेजी रूपी बेड़ियों को द्विभाषिकता की चाबी से खोलने में अवश्य सफल होगें और जब यह बेड़ियां खुल जाएगी तब चारों ओर तुम्हें सभी लोग दफ्तरों में हिंदी में ही काम करते नजर आएंगें। हां, इस वक्त मैं यह बताने के स्थिति में नहीं हूँ कि यह समय कितना होगा। शायद ....., शायद ....., या फिर शायद .....वर्ष।' अंतिम शब्द बोलते–बोलते मैंने देखा कि बेताल की आँखों में कुछ नमी सी आ गई है। तभी अचानक दिल्ली .... आ.....गई.....दिल्ली....की आवाज़ कान में पड़ी और मेरी नींद खुल गई। बेताल गायब हो चुका था। ऊपर ली हुई चादर हटाते समय मुझे महसूस हुआ कि चादर का एक कोना कुछ गीला था। मैं तेज़ी से उठा और अपना सामान लेकर बिना पीछे देखे गाड़ी से उतर गया।

–सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रबंधक
पंजाब एण्ड सिंध बैंक

यतिन नागिया

बैंकिंग और साइबर सुरक्षा

आजकल तकनीकी वातावरण में तेजी से विकास के साथ, कई संगठन, चाहे वे बड़े हों या छोटे, अपने दैनिक कार्यों में सूचना प्रणालियों के उपयोग पर पूर्ण निर्भरता रखते हैं जिससे संगठन को सूचना सुरक्षा के संबंध में प्रभावी रणनीतियों पर विचार करने की आवश्यकता होती है। आजकल बैंकिंग संस्था के संवेदनशील और मूल्यवान डेटाबेस की रक्षा प्रणाली पर अपराधियों द्वारा चोरी के रूप में साइबर हमला किया जा रहा है। साइबर सुरक्षा प्रत्येक लाभ अथवा गैर–लाभकारी वित्तीय संस्थानों के लिए महत्वपूर्ण है। बैंक अपने ग्राहकों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी रखते हैं और हमलावर इस तथ्य को अच्छी तरह से जानते हैं इसलिए बैंकों और वित्तीय संस्थानों के लिए मजबूत साइबर सुरक्षा होना अनिवार्य हो जाता है।

दुनियाभर में बैंकिंग सेल में विभिन्न साइबर सुरक्षा के अनुसार नेटवर्क, कंप्यूटर सिस्टम और प्रौद्योगिकी पर निर्भर उद्यमों के जानबूझकर या आक्षेपित शोषण को अब साइबर हमले या साइबर जोखिम के रूप में जाना जाता है। सैकड़ों वर्षों से बैंकिंग क्षेत्र पर हमले होते रहे हैं। पहले, यह पैसे की भौतिक चोरी थी, अब यह कंप्यूटर धोखाधड़ी थी। आज यह न केवल साइबर धोखाधड़ी है बल्कि ग्राहक की व्यक्तिगत पहचान योग्य जानकारी प्राप्त करने के लिए सर्वरों को हैक करता है। चूंकि, प्रत्येक कंपनियां ज्यादातर ऑन–लाइन लेनदेन करती हैं इसलिए डेटा की चोरी का जोखिम रोजाना बढ़ रहा है। बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र, साइबर हमलों से लगातार नीचे गिर रहे घोटाले में से एक हैं। यदि आप एक साल पीछे देखें तो कैम्ब्रिज एनालिटिका की खेप दुनिया भर में बैंकिंग निकायों के लिए सबसे बड़ा खतरा बन गई। एक लाख से अधिक कंप्यूटर और 100 देश कुछ रैनसमवेयर हमलों की कैद में आ गए थे। वित्तीय लेनदेन के लिए उद्यम का प्रतीक होने के कारण बैंक, हैकरों के लिए नकदी और उपभोक्ता डेटा के लिए एक खुले खजाने की खोज बन जाते हैं।

जैसे–जैसे अधिक लोग कैशलेस होते जाते हैं, गतिविधियां ऑनलाइन चेकआउट पेज और भौतिक क्रेडिट स्कैनर के माध्यम से की जाती हैं। दोनों स्थितियों में, व्यक्तिगत रूप से पहचान योग्य जानकारी को अन्य स्थानों पर पुनर्निर्देशित किया जा सकता है और दुर्भावनापूर्ण गतिविधियों के लिए उपयोग किया जा सकता है। इसका असर न सिर्फ ग्राहक पर पड़ता है अपितु डेटा को पुनः प्राप्त करने का प्रयास करते समय यह बैंक को बहुत नुकसान पहुंचाता है। जब इसे बंधक बना लिया जाता है तो बैंक को जानकारी जारी करने के लिए भारी राशि का भुगतान करना पड़ सकता है। बदले में, वे अपने ग्राहकों और अन्य वित्तीय संस्थानों का विश्वास भी खो देते हैं। जब साइबर सुरक्षा के लिए बैंकिंग में कोई कदम नहीं उठाए जाते हैं तो ग्राहक के लिए अपने सभी कार्ड रद्द करने और संभवतः किसी अन्य बैंक में नए खाते शुरू करना आवश्यक हो जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 के तहत 2013 की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि हैकर्स की नजरों के नीचे आलोचकों के वर्चस्व वाले सूचना केंद्रों में से एक बैंकिंग और वित्तीय सेवा क्षेत्र है। यही कारण है कि बैंकिंग क्षेत्र की प्रक्रियाओं में साइबर सुरक्षा के महत्व की जांच पर अधिक जोर दिया जाता है।

साइबर सुरक्षा कंप्यूटर, सर्वर, नेटवर्क और डिजिटल डेटा को अनधिकृत पहुंच और साइबर स्पेस में विनाश या हमले से बचाने के लिए डिज़ाइन की गई एक प्रक्रिया है। संगठनों को अपने वित्तीय डेटा, बौद्धिक संपदा और उनकी व्यावसायिक रणनीति के एक महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में उनकी प्रतिष्ठा की सुरक्षा के बारे में चिंतित होना चाहिए। साइबर सुरक्षा घटक के उपयोग में व्यवसायों और सरकारों का लक्ष्य न केवल उनकी गोपनीय जानकारी की रक्षा करना नहीं है बल्कि जानकारी की उपलब्धता सुनिश्चित करना और इसकी अखंडता को बनाए रखना भी है। चूंकि सूचना सुरक्षा किसी भी देश की राष्ट्रीय सुरक्षा का हिस्सा है, कई देश साइबर स्पेस में सूचना सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक व्यापक रणनीति विकसित करने का प्रयास करते हैं। संस्थानों को जागरूक साइबर कार्यक्रम, ई–प्रशिक्षण, फाउंडेशन साइबर पाठ्यक्रम और मुफ्त परामर्श प्रदान करके डिजिटल उपभोक्ता डेटा को सुरक्षित करने की पहल करनी चाहिए।

अध्ययन हमें आनन्द प्रदान करता है, अलंकृत करता है और योग्यता प्रदान करता है – अज्ञात।

वित्तीय संस्थान अपने ग्राहकों और बड़ी मात्रा में धन के बारे में बहुमूल्य जानकारी रखते है; यह बैंकिंग लेनदेन और संचालन के भीतर तकनीकी क्षमताओं के बढ़ने के कारण खतरे पैदा करता है। अपराधी और हैकर्स इन खतरों से वाकिफ हैं। वे वित्तीय संस्थानों की साइबर सुरक्षा पर हमला करने और उल्लंघन के मामलों में ग्राहकों की जानकारी और धन की चोरी करने के लिए तकनीकी प्रक्रियाओं का उपयोग करते हैं। बैंकों को अपने डेटा की सुरक्षा के लिए नए तकनीकी रुझानों के साथ अपडेट रहना चाहिए। इस क्षेत्र में ज्ञान कौशल, शीर्ष प्रबंधन समर्थन और साइबर सुरक्षा कर्मचारियों के व्यावसायिकता के कौशल की कमी है।

जोखिम दृष्टिकोण : इस क्षेत्र में त्रुटियों की पहचान करने की अत्यधिक आवश्यकता है। वित्तीय क्षेत्र के प्रासंगिक मामलों में सरकार के हस्तक्षेप की आवश्यकता पर विचार किया जाना चाहिए। सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के सामने कुछ अन्य चुनौतियाँ हैं जिसमें तकनीकी परिवर्तन और अद्यतन बनाए रखने के लिए सुरक्षा आवश्यक है। एक अन्य पहलू पर भी विचार किया जाना चाहिए जिसमें मानव संसाधन प्रबंधन की आवश्यकता है जो सही नौकरी के लिए सही लोगों को ढूंढते हैं। यहां नीचे यह समझने के लिए कुछ महत्वपूर्ण बिंदु दिये जा रहे हैं कि क्यों साइबर सुरक्षा बैंकिंग क्षेत्र में आवश्यक है –

- ✓ **उल्लंघन से वित्तीय बाजार में बैंकों की स्थिति** : उल्लंघन से वित्तीय बाजार में बैंकों की स्थिति खराब होती है। डेटा उल्लंघन बैंकों के लिए गंभीर मुद्दे हैं क्योंकि इसके परिणामस्वरूप जनता का विश्वास और ग्राहक असुरक्षा में कमी आती है। यह कमजोर साइबर सुरक्षा रणनीति के कारण होता है और इसे ठीक करना आसान नहीं है। साइबर सुरक्षा उपायों के संदर्भ में अपने ग्राहकों से सीधे बातचीत करना बैंक की जिम्मेदारी है। इन उपायों के अंतर्गत अपने ग्राहक की व्यक्तिगत और निजी जानकारी को बचाना चाहिए। उपभोक्ताओं की निर्भरता हासिल करने के लिए किसी बैंक के लिए मजबूत साइबर सुरक्षा योजना होना बहुत ही महत्वपूर्ण है।
- ✓ **गैर-अनुपालन के लिए परिणाम और दंड** : गैर–अनुपालन के लिए दंड, बैंकों के लिए अप्रत्याशित हो सकता है। यह न केवल मौद्रिक रूप से, बल्कि नोटिस के रूप में भी हो सकता है। अनुपालन बेंचमार्क होने से बैंक, साइबर सुरक्षा उपायों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। जब कोई बैंक अनुपालन करता है तो यह सुनिश्चित करता है कि वह सुरक्षा समझौते को पूरा कर रहा है और ग्राहक की जानकारी की सुरक्षा कर रहा है।
- ✓ **डेटा उल्लंघनों के मामले में उपभोक्ताओं के पैसे और समय की बर्बादी** : डेटा उल्लंघनों के मामले में उपभोक्ताओं को पैसा और समय गंवाना पड़ सकता है। जब कोई बैंक या वित्तीय संस्थान डेटा उल्लंघन की ओर जाता है तो उपभोक्ताओं का पैसा और समय बर्बाद होता है। कोई बैंक गलत तरीके से खर्च किए गए धन को पूर्ण या आंशिक रूप से पुनर्जीवित कर सकता है; हालाँकि, यह सभी परिदृश्यों में अच्छी तरह से काम नहीं करता है। उल्लंघन के कारण होने वाली कार्रवाइयां अत्यधिक समय लेने वाली होती हैं जिससे ग्राहकों को तनाव होता है। उन्हें बैंक कार्ड रद्द करने, वित्तीय विवरणों को लगातार सत्यापित करने और किसी भी डेटा उल्लंघन परिदृश्य के मामले में तकनीकी अड़चनों पर नज़र रखने की आवश्यकता हो सकती है।
- ✓ **डेटा उल्लंघनों का प्रबंधन**: उपभोक्ताओं के लिए डेटा उल्लंघनों का प्रबंधन करना मुश्किल होता है जब उन्हें पता चलता है कि उनका डेटा और जानकारी गलत हाथों में है। एक बार उपभोक्ता की निजी जानकारी चोरी हो जाने के बाद, सुरक्षा की स्थिति बहुत कम रह जाती है और नियंत्रण से बाहर हो सकती है। इसलिए बैंकों और वित्तीय संस्थानों के लिए साइबर सुरक्षा अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि वे उन उपभोक्ताओं का निजी डेटा रखते हैं जो उन पर भरोसा करते हैं।
- ✓ **मोबाइल एप्स के माध्यम से जोखिम** : अधिक व्यक्ति अपने बैंक खातों का उपयोग मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से करते हैं। इनमें से कई व्यक्तियों के पास कम या कोई सुरक्षा नहीं होती है और इससे हमले की आसन्न संभावना बहुत बड़ी हो जाती है। इसलिए दुर्भावनापूर्ण गतिविधियों को रोकने के लिए सुरक्षित बैंकिंग सॉफ्टवेयर समाधान आवश्यक हैं।
- ✓ **तीसरे पक्ष के संगठनों में उल्लंघन** : जैसा कि बैंकों ने अपनी साइबर सुरक्षा को उन्नत किया है, हैकर्स अब धोखाधड़ी को अंजाम देने के लिए साझा बैंकिंग सिस्टम और तीसरे पक्ष के नेटवर्क का प्रयास करते हैं। यदि ये बैंक की तरह सुरक्षित नहीं हैं तो हैकर्स आसानी से पहुँच प्राप्त कर सकते हैं।

✓ **क्रिप्टो – मुद्रा हैक्स के कारण जोखिम में वृद्धि :** ठेठ या पारंपरिक धोखाधड़ी के अलावा, क्रिप्टो – मुद्रा के परिपक्व होने के स्थान में हैक को बढ़ावा दिया गया है। चूंकि उद्योग पूरी तरह से सुनिश्चित नहीं है कि इस विकसित बाजार में बैंकिंग के लिए साइबर सुरक्षा सॉफ्टवेयर कैसे संचालित किया जाए, इसलिए हमलावरों की धोखाधड़ी करने की क्षमता बढ़ गई है। वे इस मुद्रा को भारी मात्रा में हड़पने की कोशिश करते हैं जिसमें जागरूकता का स्तर कम है और हो सकता है कि इसमें तेजी से वृद्धि हो जाए।

बैंकिंग और वित्त क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के साइबर खतरे :

बैंकिंग और वित्त क्षेत्र विभिन्न साइबर खतरों के क्षेत्र में आते हैं। सुरक्षा चेकलिस्ट मैलवेयर सॉफ्टवेयर उपकरणों से युक्त हैकर्स वित्तीय और बैंकिंग क्षेत्रों से महत्वपूर्ण जानकारी निकालने के लिए विभिन्न तरीके अपनाते हैं, इनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं :

1) **ऑटोमेटेड टेलर मशीन (एटीएम) कैश आउट :** एटीएम के साथ किसी भी धोखाधड़ी को बड़े मूल्यांकन से बाहर, नकदी निकालने में बैंकिंग और वित्त क्षेत्रों के लिए एटीएम कैश–आउट साइबर खतरे के रूप में जाना जाता है। हैकर्स के दृष्टिकोण से प्रक्रिया यह है कि जब डेबिट कार्ड के दुर्भावनापूर्ण दुराचारियों का उपयोग कई एटीएम या एक एटीएम से भारी निकासी के दावों के लिए एकमुश्त नकदी निकालने के लिए किया जाता है तो बैंकिंग अधिकारियों के लिए साइबर खतरे की स्थिति पैदा हो जाती है। एक बार जब एटीएम सेटिंग्स समाप्त हो जाती हैं या बदल जाती हैं, तो हैकर्स ''अनलिमिटेड'' के लिए कार्य करते हैं।

2) **स्पूफिंग :** बैंकों के उपभोक्ताओं को भ्रमित करने के नए चलन में स्पूफिंग शामिल है। इस पद्धति का उपयोग करते हुए हैकर्स एक पोर्टल संचालित करते हैं जो बिल्कुल वैसा ही दिखता है जैसा कि एक नियमित बैंक संचालित करता है। जैसे ही उपयोगकर्ता अपने क्रेडेंशियल दर्ज करता है जिसमें लॉगिन आईडी और पासवर्ड शामिल होता है; तब इस जानकारी को बाद में उपयोगकर्ता के पेज से हैकर्स तक ले जाया जाता है। इस माध्यम में हैकर्स, बैंक की वेबसाइट के यूआरएल को निशाना बनाते हैं। बैंकिंग में साइबर सुरक्षा की उपस्थिति में भी यह प्रमाणित साइट से एन्क्रिप्टेड विवरण चोरी करने के सबसे चालाक तरीकों में से एक है।

3) **धन–शोधन निवारण :** बैंकों के लिए प्रमुख खतरों में से एक एंटी–मनी लॉन्ड्रिंग (एएमएल) निगरानी प्रणाली है। हैकर्स झूठी सकारात्मकता को उचित रूप से सुनिश्चित करते हैं जिसे समझने में एक विश्लेषक को समय लगता है और कुछ ही समय में हैकर्स पैसा को किसी अन्य उपयोगकर्ता के खाते से निस्संदेह साइबर सुरक्षा के अभाव में चोरी कर लेते हैं।

4) **फिरौती – वेयर सॉफ्टवेयर :** साइबर सुरक्षा की उपस्थिति में बैंकिंग के लिए सबसे बड़ा खतरा बैंकिंग मोबाइल फोन के माध्यम से होता है। कुछ सॉफ्टवेयर हैं जोकि किसी भी व्यक्ति के लिए खतरनाक हैं। इन्हें एक बार डाउनलोड कर लें तो यह बैंक की साइबर सुरक्षा से दूर कर देता है। जैसे ही हैकर आपके फोन से जुड़ता है, बैंक से संबंधित आपकी सभी आवश्यक जानकारी दुर्भावनापूर्ण तरीके से कार्मिक प्रणाली की ओर से उनके पास पहुंच जाती है।

5) **डिस्ट्रीब्यूटेड डिनायल ऑफ सर्विस (डीडीओएस) :** वित्तीय क्षेत्र के लिए साइबर सुरक्षा खतरे भारी मात्रा में साइबर खतरों से गुजरते हैं। हैकर्स वेबसाइट को किसी त्रुटि या उपयोगकर्ताओं के लिए अनुपलब्ध पृष्ठ पर रीडायरेक्ट करके वेबसाइट को धीमा करने का प्रयास करते हैं। डीडीओएस पर हमला करके यह वित्तीय कोर प्रणाली को नुकसान पहुंचा सकता है। वित्तीय चुनौतियों के अलावा, वित्त क्षेत्र को प्रतिष्ठा के उल्लंघन का भी सामना करना पड़ता है।

सुरक्षित सॉफ्टवेयर के साथ हमलों से बचाव :

❍ **सुरक्षा ऑडिट :** किसी भी नए साइबर सुरक्षा सॉफ्टवेयर को लागू करने से पहले एक नियमित ऑडिट आवश्यक है। समीक्षा से मौजूदा सेटअप की ताकत और कमजोरियों का पता चलता है। इसके अलावा यह सिफारिशें प्रदान करता है जो उचित निवेश की अनुमति देते हुए पैसे बचाने में मदद कर सकता है।

- **फायरवॉल** : साइबर सुरक्षा बैंकिंग कॉन्फ़िगिरेशन में केवल एप्लिकेशन शामिल नहीं हैं। हमलों को रोकने के लिए इसे सही हार्डवेयर की भी आवश्यकता होती है। एक अद्यतन के अनुसार फ़ायरवॉल, बैंक नेटवर्क के अन्य भागों तक पहुँचने से पहले दुर्भावनापूर्ण गतिविधि को ब्लॉक कर सकते हैं।

- **एंटी-वायरस और एंटी-मैलवेयर एप्लिकेशन** : फ़ायरवॉल अपग्रेड सुरक्षा बढ़ाता है, यह हमलों को तब तक नहीं रोकेगा जब तक कि एंटी–वायरस और एंटी–मैलवेयर एप्लिकेशन अपडेट नहीं हो जाते। पुराने सॉफ़्टवेयर में नवीनतम नियम और वायरस हस्ताक्षर नहीं हो सकते हैं। बदले में, यह आपके सिस्टम पर संभावित विनाशकारी हमले को रोक कर सकता है।

- **बहु-कारक प्रमाणीकरण** : यह सुरक्षा, जिसे एमएफए के रूप में भी जाना जाता है, उन ग्राहकों की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है जो अपनी बैंकिंग करने के लिए मोबाइल या ऑनलाइन एप का उपयोग करते हैं। कई उपयोगकर्ता अपना पासवर्ड कभी नहीं बदलते हैं या बदलते भी हैं तो वे छोटे परिवर्तन करते हैं। एमएफए हमलावरों को नेटवर्क तक पहुंचने से रोकता है क्योंकि यह सुरक्षा के दूसरे स्तर की मांग करता है। उदाहरण के लिए ग्राहक के सेल फोन पर भेजा गया छह अंकों का कोड आदि।

- **बायोमेट्रिक्स** : यह एमएफए का एक और संस्करण है जो टेक्स्ट कोड से भी ज्यादा सुरक्षित है। प्रमाणीकरण का यह रूप उपयोगकर्ता की पहचान की पुष्टि करने के लिए रेटिना स्कैन, अंगूठे के निशान या चेहरे की पहचान पर निर्भर करता है। हालांकि हैकर्स ने अतीत में इस प्रकार के प्रमाणीकरण का उपयोग किया है लेकिन इसे पूरा करना अधिक कठिन है।

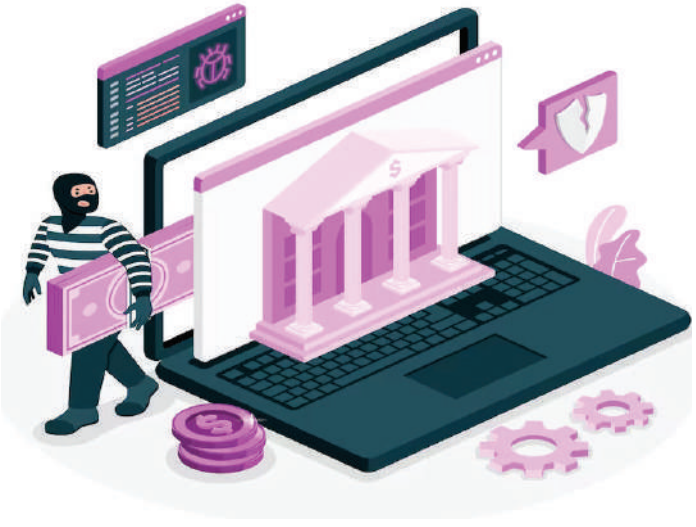

- **स्वचालित लॉगआउट** : कई वेबसाइट और एप उपयोगकर्ता को अनुमति देने पर ही लॉग–इन रहने की अनुमति देते हैं। इस प्रकार, वे अपनी लॉगिन क्रेडेंशियल दर्ज किए बिना किसी भी समय अपनी जानकारी तक पहुंच सकते हैं। हालांकि, यह हमलावरों को आपके रिकॉर्ड आसानी से प्राप्त करने की अनुमति भी देता है। स्वचालित लॉगआउट कुछ मिनटों की निष्क्रियता के बाद उपयोगकर्ता की पहुंच को बंद करके इसे कम कर देता है।

- **शिक्षा** : उपरोक्त सभी उपाय बैंकिंग क्षेत्र में साइबर सुरक्षा को बढ़ा सकते हैं। फिर भी, यदि ग्राहक अपनी जानकारी को असुरक्षित स्थानों से एक्सेस करना जारी रखते हैं या अपने लॉगिन क्रेडेंशियल को अनुचित तरीके से सुरक्षित रखते हैं तो वे मदद नहीं कर सकते इसलिए शिक्षा महत्वपूर्ण है। जब बैंक अपने ग्राहकों को इन कमजोरियों से संबंधित परिणामों के बारे में सूचित करते हैं तो यह उन्हें अपने निवेश को खोने के डर से अपनी आदतों को बदलने के लिए प्रेरित कर सकता है।

उपरोक्त अध्ययन के महत्वपूर्ण तथ्यों के विश्लेषण बाद यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि विभिन्न प्रकार की दुर्भावनापूर्ण गतिविधियों के बीच, वित्तीय संस्थान ज्यादातर तीन प्रकार के जोखिमों के संपर्क में हैं। ये जोखिम ऑनलाइन पहचान की चोरी, जानबूझकर कंप्यूटर सिस्टम को नुकसान पहुंचाना और हैकिंग के मुद्दों से निपटना है। वास्तव में, आधे से अधिक वित्तीय संस्थान हर तीन महीने में कम से कम एक बार इन मुद्दों का सामना कर रहे हैं जो साइबर हमलों के बढ़ते खतरे का संकेत देता है।

साइबर बैंकिंग में सुरक्षा की लड़ाई साइबर खतरों और चुनौतियों का सामना करने में एक उभरती हुई चुनौती है। उपयोगकर्ताओं की वित्तीय जानकारी हासिल करने की चुनौतियां दशकों से चली आ रही हैं। विभिन्न देशों के सरकारी संगठनों को वित्तीय परिसंपत्तियों के सुचारू संचालन के लिए जिज्ञासु साइबर नीतियों को अपनाने की आवश्यकता है। प्रतिस्पर्धी स्पेक्ट्रम में बैंकों और वित्तीय क्षेत्र की गोपनीयता, दिशानिर्देशों में तेजी लाने और साइबर सुरक्षा समाधान के लिए हर कार्य में दो कारक प्रमाणीकरण के लिए प्रेरित करने की जरूरत है। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि बैंकों द्वारा ग्राहकों को गुणात्मक नीतियों और सेवाओं को उधार देने के लिए जिन तृतीय पक्षों या विक्रेताओं की सेवाएं ली जाती है, उनकी जाँच करने की आवश्यकता है। इसके अलावा, कैशलेस होना एक बात है और इसे क्रिप्टो – मुद्रा हैकिंग से बचाना वित्तीय क्षेत्र का एक अनिवार्य पहलू है।

–वरिष्ठ प्रबंधक
आंचलिक कार्यालय गुरुग्राम

स्थापना दिवस समारोह – 2023

24 जून, 2023 को बैंक ने अपना 116वाँ स्थापन दिवस समारोह मनाया। इस अवसर पर बैंक के स्टाफ प्रशिक्षण महाविद्यालय, रोहिणी, दिल्ली में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम में बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री स्वरूप कुमार साहा, कार्यकारी निदेशक श्री कोल्लेगाल वी राघवेन्द्र, कार्यकारी निदेशक डॉ. रामजस यादव तथा अन्य उच्चाधिकारी उपस्थित रहे। बैंक के कतिपय ग्राहकों तथा सेवानिवृत्त स्टाफ सदस्यों को भी कार्यक्रम में विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम में पीएसबी परिवार के सदस्यों तथा पेशेवर कलाकारों ने सांस्कृतिक प्रस्तुति दी।

दीप प्रज्ज्वलन

सांस्कृतिक गतिविधियाँ

स्पर्धा ही जीवन है उसमें पीछे रहना जीवन की प्रगति को रोकना है – नारायण पण्डित।

स्थापना दिवस समारोह – 2023

राजिंदर सिंह बेवली

मेरी इंदौर/महू यात्रा

सोनी टीवी के एक सीरियल 'पुण्य श्लोक अहिल्याबाई' से मैं इतना प्रभावित हुआ कि मैंने अहिल्याबाई होलकर के किले के दर्शन करने की ठान ली और वहाँ तक पहुँचने के लिए महू जाना ज़रूरी था। MHOW यानी MILITARY HEADQUARTERS OF WAR और जिसका नाम बदलकर अब डॉ. अंबेडकर नगर कर दिया गया है और वहाँ जाने के लिए इंदौर जाना ज़रूरी होता है।

कहते हैं जब कोई अच्छा विचार मन में आए तो रास्ते स्वयं खुलते चले जाते हैं। मेरे एक परम मित्र योगेश अग्रवाल जी ने मेरा रास्ता खोला और मेरा साथ देने को तैयार हो गए। फिर गत वर्ष अगस्त के पहले सप्ताह एक दिन मोहाली से हम इंदौर पहुँच गए। होटल में थोड़ा विश्राम करने के बाद हम इंदौर में ही रहने वाली मेरी एक मित्र मधुबाला चंदन जी के घर पहुँचे। चाय के साथ उनके अपने बनाए हुए इंदौरी पकवान (सफेद ढोकला, रवा लड्डू, इंदौरी कचौरी आदि आदि) का हल्का सा स्वाद चखते हुए हम इंदौर घूमने निकल पड़े।

राजवाड़े की छतरियाँ :

थोड़ी ही देर में हमारे सामने थीं होलकर परिवार के राजवाड़े की खूबसूरत ऐतिहासिक छतरियाँ। शहर के पश्चिमी क्षेत्र छत्रीबाग में किलेनुमा विशाल परकोटे के बीच होलकर राजवंश की वह स्मृतियां संजोई हुई हैं जिसमें वीरता, त्याग, स्थापत्यकला, सौंदर्य और अध्यात्म के अंश शामिल हैं।

छप्पन दुकान :

और फिर हम पहुँच गए इंदौर की मशहूर 'छप्पन दुकान'। आप जानते ही हैं कि यदि किसी मार्केट में खाने–पीने की एक दुकान हो जाए तो पूरी मार्केट चल निकलती है लेकिन इंदौर में तो एक ही स्थान पर खाने–पीने की 56 दुकानें! और वे भी एक से बढ़कर एक। इतना आकर्षण है इस बाज़ार में कि कोई भी पर्यटक यहाँ आए बिना इंदौर से जा नहीं सकता। शायद ही कोई ऐसा ज़ायका हो जिसका आनंद आप यहाँ न उठा सकें। खाने–पीने के साथ–साथ और भी कई रंगारंग कार्यक्रम यहाँ चलते ही रहते हैं। हम तो पहले ही खा–पी कर चले थे इसलिए हल्की–फुल्की 'खोपरा पैटी' के साथ ही बाज़ार का तो पूरा आनंद लिया।

अगली सुबह हमारी तैयारी थी महू की। सुबह 7 बजे हमने टैक्सी ली और आधे घंटे बाद ही हम पहुँच गए महू शहर में जहाँ पंजाब एण्ड सिंध बैंक के राजभाषा विभाग के पूर्व प्रबंधक, मेरे गुरु और परम मित्र डॉ. कुलवंत सिंह शेहरी हमें रिसीव करने के लिए खड़े थे। पुराने डिज़ाइन की और बहुत सुंदर उनकी कोठी गर्मियों में भी ठंडक का अहसास करवा रही थी। उनकी श्रीमती के हाथों के बने बहुत ही स्वादिष्ट आलू के परांठे खाने के तुरंत बाद हम निकल पड़े लगभग 80 किमी दूर महेश्वर के लिए, जहाँ अहिल्याबाई होल्कर ने सत्ता की परिभाषाएं ही बदल दी थीं। डॉ. शेहरी ने अपने एक मित्र और वहाँ की

एक जानी मानी हस्ती श्री यदुनंदन पाटीदार को भी साथ लिया क्योंकि उन्हें पूरे इलाके की अच्छी जानकारी थी। महेश्वर के रास्ते में दूर–दूर तक हरियाली और उन दिनों सब्जियों की खासकर कद्दू की खेती बहुत अधिक थी। घंटे भर बार हम खड़े थे महेश्वर के किले के सामने।

महेश्वर का किला :

यही वह किला है जिसमें रानी अहिल्याबाई रहा करती थीं। मैं आपको बताता चलूँ कि धार्मिक संस्कारों की अहिल्याबाई केवल एक रानी ही नहीं बल्कि एक देवी भी थीं। रानी अहिल्याबाई इतिहास प्रसिद्ध सूबेदार मल्हारराव होलकर के पुत्र खंडेराव ही पत्नी थीं। वे अपनी बुद्धिमत्ता, साहस और प्रशासनिक कौशल के लिए व्यापक रूप से जानी जाती थीं। पूरा मालवा उनके लिए एक परिवार जैसा था और वहाँ के प्रत्येक नागरिक का दुःख अहिल्याबाई का दुःख था। रानी का हृदय बहुत ही कोमल था लेकिन शासन के फैसले वे बहुत ही दृढ़ता से लिया करती थीं। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा, विधवाओं के विवाह और उनका पुनर्स्थापन, जुलाहों और बुनकरों के लिए यानी समाज के हर वर्ग की भलाई के लिए बहुत काम किया। उन्होंने महिलाओं को युद्धकौशल में भी निपुण बनाया। साधारण परिवार में जन्मीं अहिल्याबाई ने इतिहास की कई इबारतें लिख दीं। किले के बीच उनकी सोच की कुछ पंक्तियाँ गौर से पढ़िए:

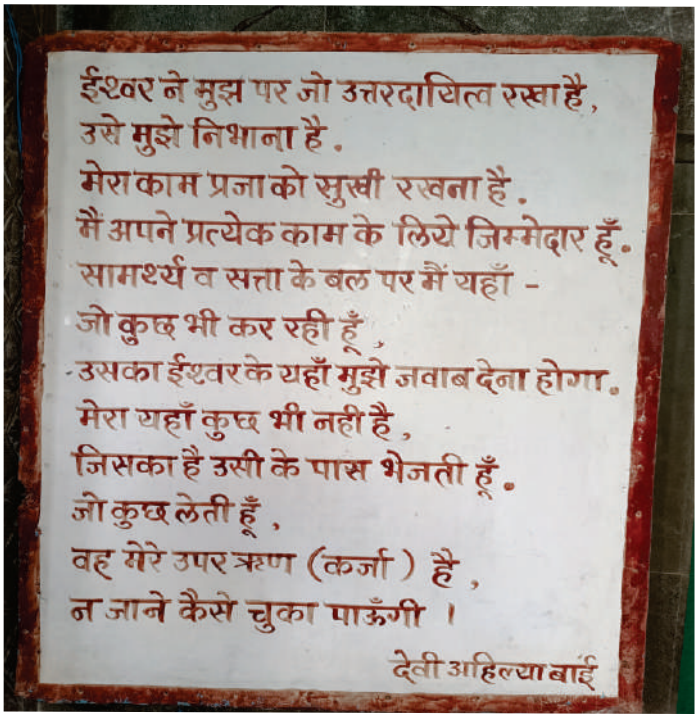

उस रात के खाने के लिए हमें यदुनंदन जी ने अपने घर पर आमंत्रित किया जहाँ मध्य प्रदेश की मशहूर दाल–बाटी तैयार की गई थी। स्वादिष्ट दाल–बाटी के साथ यदुनंदन परिवार का प्यार, सेवा–भाव और विशेष रूप से परोसने का ढंग हम ज़िंदगी भर नहीं भूल पाएंगे।

पातालपानी :

अगले दिन एक अद्भुत और बेहद खास जलप्रपात देखने गए जिसका नाम है 'पातालपानी', जो महू तहसील में ही स्थित है। यह एक विशाल जलप्रपात है जिसकी ऊंचाई लगभग 300 मीटर की है। मानसून के दौरान यह जलप्रपात अद्भुत रूप पेश करता है। इस स्थल से किंवदंती भी जुड़ी है, माना जाता है कि इस झरने के कुंड की गहराई अभी तक नापी नहीं गई है और कहा जाता है कि इस कुंड का पानी पाताल तक अपना सफर पूरा करता है इसलिए इसका नाम पातालपानी रखा गया है। यह भारत के सबसे खतरनाक वाटरफॉल में गिना जाता है, जहां जरा सी भी लापरवाही जान ले सकती है।

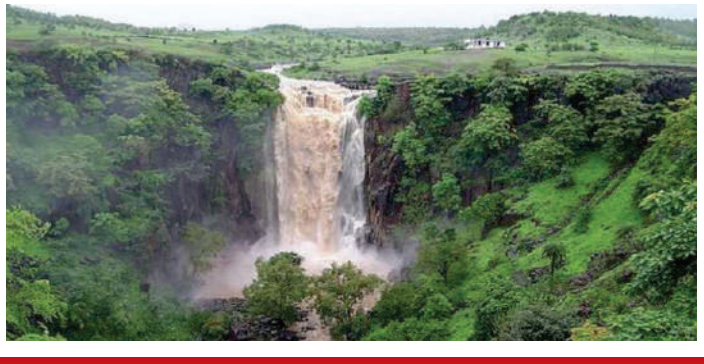

महिलाओं की कांवड़ यात्रा : वहाँ से चलने के बाद रास्ते में बहुत अधिक काँवड़िए दिखाई दिए और जीवन में पहली बार महिला कांवड़ियों के दर्शन भी हुए।

उस रात हमारा विशेष खाना इंदौर में शेहरी जी के भतीजे और मुंबई में बैंक के मेरे मित्र श्री सतवंत सिंह शेहरी जी पुत्र रतनजीत सिंह शेहरी जी के घर पर रखा गया था। उनके परिवार के एक–एक सदस्य की जितनी तारीफ की जाए, कम होगी।

महू का सौंदर्य :

सेना का हैडक्वार्टर होने के कारण महू एक बहुत ही अनुशासित शहर है। यहाँ की सड़कें, यहाँ के वृक्ष, यहाँ के भवन सब–कुछ खुला–खुला और हवादार है। तो अगले दिन महू शहर के अंदर ही घूमने का विचार बनाया। महू में भारतीय थलसेना के कई इकाइयाँ है। यहाँ पर इंफैंट्री स्कूल, सेना का संचार प्रौद्योगिकी महाविद्यालय (MCTE) और थलसेना का युद्ध महाविद्यालय स्थित है। साथ ही यहाँ विश्व प्रसिद्ध डॉ. भीमराव अंबेडकर राष्ट्रीय सामाजिक शोध संस्थान भी है।

डॉ. भीमराव अंबेडकर का स्मारक :

अचानक कार रुकी और शेहरी जी ने सामने एक खूबसूरत भवन की ओर इशारा करते हुए कहा 'बेवली जी, यह है सामने अंबेडकर साहब की जन्मस्थली। मैंने हैरानी से पूछा कौन अंबेडकर, डॉ. भीमराव अबेडकर तो नहीं!! उन्होंने कहा जी हाँ हमारे संविधान निर्माता भारतरत्न डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर साहब। यहीं सेना की बैरक में उनका जन्म हुआ था जो आज इस स्मारक के रूप में आपके सामने है।

मैं बिना देरी के कार से उतरा और उस बहुज्ञ, विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ, और समाज सुधारक के स्मारक हॉल में दाखिल हो गया। स्मारक में डॉ. अंबेडकर के पूरे जीवन को खूबसूरत तस्वीरों और मूर्तियों के माध्यम से समझाया गया था ताकि वहाँ आने वाला हर व्यक्ति प्रेरित हो सके।

और इसी के साथ संपन्न हो रहा था, हमारा इंदौर और महू का सफर। श्रीमती शेहरी जी ने मालवा एक्सप्रैस में बिठाकर और अनेक उपहार देकर मीठी यादों के साथ हमें विदा किया। मधुबाला जी ने भी पोहा–जलेबी के साथ हाथों से बनाई कई तरह की आँवला कैंडियों से हमें भर दिया। सच में बहुत कुछ था जो देखा और बहुत कुछ था जो समयाभाव के कारण न देख पाए, फिर भी जो देखा उसे जीवन में कभी भी नहीं भुला पाएंगे।

आप भी एक बार अवश्य जाइएगा इंदौर/महू और फिर हमारी तरह सुनहरे पलों को संजो लाइएगा।

–प्रेरक वक्ता और पूर्व स.म.प्र (राभा)
पंजाब एण्ड सिंध बैंक

स्वदेश-प्रेम, स्वधर्मभक्ति और स्वावलंबन आदि ऐसे गुण हैं जो प्रत्येक मनुष्य में होने चाहिए
– रामजी लाल शर्मा।

प्रवीन कुमार

ज़रा सोचिए.....!

यूं ही खाली बैठे हुए मोबाइल पर उंगलियां चला रहा था। सेवानिवृत्त व्यक्ति के लिए मोबाइल मन लगाने का एक बड़ा सहारा है। एक तो हमारी सरकार पूरी तरह से बुजुर्ग होने से पहले आपको रिटायर कर देती है वहीं दूसरी ओर आपको वरिष्ठ नागरिक की श्रेणी में डालकर एक इज्जतदार सामाजिक प्राणी बना देती है। अपनी पत्नी की नजरों में आप उस 24 घण्टे के गार्ड जैसे लगने लगते हैं जिसे दैनिक गतिविधियों पर नजर रखने के लिए घर बिठा दिया गया हो।

थोड़ा विषय पर वापस आता हूँ। मोबाइल पर उंगली चलाते वक्त जब व्हाट्सएप पर झांकने की कोशिश की तो पाया कि एक ग्रुप में दो राजनीतिक दलों के समर्थकों में द्वंद युद्ध छिड़ा हुआ था। अपने–अपने दल के पक्ष में तरह–तरह के तर्क–कुतर्क दिए जा रहे थे। यहां ये बताना जरूरी है कि दोनों महानुभाव कभी बहुत गहरे मित्र हुआ करते थे। मगर विचारधाराओं का विरोध करते–करते कब एक–दूसरे के दुश्मन बन बैठे, उन्हें खुद याद नही। थोड़ा हटकर फेसबुक की तरफ नजर दौड़ाई तो अपने करीबी रिश्तेदार के स्टेटस पर एक दल विशेष के समर्थन में चार मैसेज चिपके मिले, हाँ ये बात और है कि नीचे कमेंट बॉक्स में कुछ लोग उनकी ऐसी–तैसी करने में लगे थे। चाहे ट्विटर हो या इंस्टाग्राम, यू ट्यूब हो या फेसबुक हर जगह राजनीतिक विश्लेषकों की भीड़ लगी है। सोशल मीडिया पर हर कोई मैसेज लपकने को ऐसे तैयार बैठा है जैसे बचपन में गुच्चिक से गुल्ली उछलने पर बच्चे झपट के लपका करते थे और मैसेज लपकना मात्र ही उनका एकमात्र लक्ष्य नही, उस ज्ञान का निःशुल्क वितरण करना भी उनके जीवन का एक परम उद्देश्य है। अब मैसेज सही है या गलत, ये उनके लिए बेमानी है। उन्हें बस प्राप्त मैसेज को गति देनी है। कई बार इस हिदायत के साथ कि "इस मैसेज को अधिक से अधिक लोगों तक पहुचाएं।"

मुझे याद आता है अपना बचपन, जब पिताजी चुनाव के दौरान वोट डालने जाते थे। वापस आकर अपनी इंक लगी ऊंगली को दिखाकर बताते थे कि वोट डाल दिया गया है। जब हम पूछते थे कि किसको वोट डाला तो आहिस्ता से बोलते थे कि ये सीक्रेट है। ये बताया नहीं जाता और कई बार हमारे चाचाजी और पिताजी के दोस्तों को भी पता नहीं होता था कि पिताजी ने किसे वोट दिया है। कमोबेश सबका व्यवहार यही रहता। हर व्यक्ति अपने मतदान को गुप्त रखता। आज मुझे इस सीक्रेट का अर्थ समझ आया। उस समय लोग इतने समझदार थे कि अपने व्यक्तिगत संबंधों को राजनीति से ऊपर रखते थे। अलग–अलग विचारधाराओं और राजनीतिक दल विशेष से संबंध रखने वाले लोग अपनी राजनीतिक रुचि जाहिर ना करके अपने रिश्तों में खटास पैदा करने से बचते थे। आज हम बौद्धिक, आर्थिक और सामाजिक स्तर पर अपने बुजुर्गों से ऊपर उठ चुके हैं लेकिन रिश्तों को निभाने में बहुत पिछड़ गए। अब व्यक्ति किसी भी राजनीतिक दल को अपना समर्थन ढिंढोरा पीट–पीटकर जाहिर कर रहा है। सोशल मीडिया पर विरोधी दल को कोस रहा है, बिना इस बात की परवाह के कि उसी का कोई अपना, उसके इस कृत्य से आहत हो रहा है। ज़रूरी नहीं कि उसकी खुद की रुचि, उसके भाई की रुचि मेल खाती हो। इसे ऐसे समझिए कि आपका कोई मित्र बहुत दिन बाद आप के यहां खाने पर आता है, आपको बैगन बहुत पसंद है जबकि उसे बैगन नुकसान करता है। अब आप ने उसकी प्लेट में बैगन परोस दिया तो एक बार आपका मन रखने के लिए वो खा लेगा, पर इस सम्मान का अर्थ ये तो नही कि आप उसकी प्लेट में तब तक बैगन रखते रहें जब तक वो खिसिया के प्लेट आपके मुँह पर न मार दे। किसी दल विशेष का समर्थन या विरोध व्यक्ति का बिल्कुल व्यक्तिगत मामला है। देखा गया है कि कई जगह राजनीतिक विद्वेष के चलते मसला गंभीर हो जाता है लेकिन लोगों का रवैया आज ये है कि रिश्ते बिगड़ते हैं तो बिगड़ें, भाई बात करना बंद करे तो करे, मेरा धर्म तो विरोधी राजनीतिक दल और उसके समर्थकों को कोसना और नीचा दिखाना है और वो मैं चुनाव होने तक करता रहूंगा। ज़रा सोचिए क्या आप भी यही गलती तो नहीं कर रहे हैं।

–सेवानिवृत्त प्रबंधक
पंजाब एण्ड सिंध बैंक

नराकास उपलब्धियां

वित्तीय वर्ष 2022–23 के दौरान सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन एवं नराकास संबंधी गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता के लिए बैंक के आंचलिक कार्यालय नोएडा को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), नोएडा से प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। छायाचित्र में नराकास अध्यक्ष से पुरस्कार ग्रहण करते हुए आंचलिक प्रबंधक नोएडा श्री विनोद कुमार पाण्डेय तथा आंचलिक कार्यालय नोएडा में पदस्थ राजभाषा अधिकारी श्री शिवशरण कुमार शिव।

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति जबलपुर द्वारा वर्ष 2022–23 में राजभाषा में सर्वोत्कृष्ट कार्य करने के लिए बैंक की शाखा महाराजपुर को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार नराकास जबलपुर की छमाही बैठक में नराकास अध्यक्ष महोदय श्री विमल किशोर के कर कमलों से शाखा प्रबंधक श्री सौरभ सिंघई तथा अधिकारी सुश्री सुषमा कौरव ने प्राप्त किया।

बैंक की शाखा बेगम ब्रिज, मेरठ को वर्ष 2022–23 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में उत्तम कार्य–निष्पादन हेतु राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता में नगर राजभाषा कार्यन्वयन समिति (बैंक एवं बीमा), मेरठ द्वारा द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया। नराकास मेरठ की छमाही बैठक में नराकास अध्यक्ष के कर कमलों से यह पुरस्कार प्रदान किया गया।

नम्रता मनुष्य का आभूषण है – महात्मा गाँधी।

नराकास उपलब्धियां

बैंक की शाखा के के रोड रायपुर को वर्ष 2022 के दौरान राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य–निष्पादन के लिए बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर (छत्तीसगढ़) द्वारा एकल कार्यालय की श्रेणी में द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। नराकास की छमाही बैठक में शाखा प्रबंधक श्री विजय कुमार ने यह पुरस्कार और प्रमाण–पत्र ग्रहण किया।

राजभाषा संगोष्ठी/सम्मेलन

आंचलिक कार्यालय गुरुग्राम में 03 जून, 2023 को आंचलिक प्रबंधक श्री संजीव लाल श्रीवास्तव की अध्यक्षता में "बैंकिंग कार्यों में राजभाषा प्रयोग की स्थिति" विषय पर राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रधान कार्यालय में पदस्थ महाप्रबंधक महोदया सुश्री रश्मिता क्वात्रा को आमंत्रित किया गया था। संगोष्ठी में गुरुग्राम अंचल के विभिन्न शाखा प्रभारियों ने सहभागिता की।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति को दिए गए आश्वासन पर कार्रवाई करते हुए आंचलिक कार्यालय भोपाल द्वारा 14 जून, 2023 को आंचलिक प्रबंधक महोदय श्री अवधेश नरायन सिंह की अध्यक्षता में राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। उक्त सम्मेलन मे बैंक ऑफ़ बड़ौदा, अंचल कार्यालय भोपाल में पदस्थ मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री चंदन कुमार वर्मा को मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था।

काव्य-मंजूषा

कुछ रह तो नहीं गया ?

दो महीने के बच्चे को आया के पास छोड़कर,
जॉब पर जाने वाली मां से आया ने पूछा,
कुछ रह तो नहीं गया..?

चाबी, पर्स आदि सब ले लिया न,
अब वो कैसे कहे कि पैसों के पीछे भागते–भागते,
सब कुछ पाने की चाहत में,
जिसके लिए सब कुछ कर रही है,
वही रह गया..।

बड़ी ख्वाहिश से बेटे को,
पढ़ाई के लिए विदेश भेजा था,
वह वहीं सैटल हो गया..।

बड़ी मुश्किल से तीन महीने का वीजा मिला,
और चलते समय बेटे ने कहा,
सब चैक कर लिया न, कुछ रह तो नहीं गया..?
क्या जवाब देते कि अब,
छूटने को रह ही क्या गया..?

सेवानिवृत्ति की शाम पीए ने याद दिलाया,
चैक कर लें सर, कहीं कुछ रह तो नहीं गया..?
थोड़ा रुका और सोचा,
पूरी जिंदगी तो आने–जाने में यहीं निकल गई,
अब और रह ही क्या गया..?

भरी आंखों से बोला, नहीं कुछ नहीं रह गया,
और जो अब रह गया, वह सदा मेरे पास
ही रह गया...।

अतुल श्रीवास्तव
वरिष्ठ प्रबंधक,
आंचलिक कार्यालय गुरुग्राम

स्त्रीत्व

छोटे कपड़ों से न नापो उसके चरित्र को
आधुनिक है लेकिन उसे शालीनता का भान भी है

वो झुकती है बड़ों के पाँवों पर आशीष के लिए
हालाँकि खुद से बड़ा उसका स्वाभिमान भी है

रखा है आँचल है उसके सिर पर अब भी देखो
भले उसके हाथ में सियासत की कमान भी है

कपड़े सहज और आधुनिक भले हों उनके
माँग में सिंदूर सुहागन होने का अभिमान भी है

दफ्तर में भी हर जिम्मेदारी बखूबी सम्हालती है वो
घर में हर कोई उस पर निर्भर है उसे इसका ध्यान भी है

हर काम हर तरीके से हमेशा से पुरुष के बराबर है वो
एक हाथ में कम्प्यूटर और लिए गोद में सन्तान भी है

अपने सपने भी पूरे करती है वो अपनी काबिलियत से
और रखती अपनी सभी मर्यादाओं का ध्यान भी है

सबके जन्मदिन और जरूरी तारीखें दर्ज हैं जिनमें
स्त्री को उत्सव व्रत त्यौहार याद रखने का वरदान भी है

तेरी हर इच्छा को बिन कुछ कहे मान लेती है वो
मत भूलो वो भी इंसान है उसके मुँह में जुबान भी है

वो चाहे तो अकेले ही जीत सकती है दुनियाँ को
वो विनम्रता की जमीं है तो हुनर का आसमान भी है

बराबरी का दर्जा सिर्फ अधिकार नहीं समाज की जरूरत है अब
सन्तुलित और सशक्त होना ही अब स्त्रीत्व की पहचान भी है।

रीना आर्या
प्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी)
प्रधान कार्यालय सूचना
प्रौद्योगिकी विभाग

कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है – सुमित्रानंदन पंत।

काव्य-मंजूषा

प्लास्टिक

सुनो, सुनो... सभी सुनो... प्लास्टिक की कहानी,
पहले सबको भाता, फिर करता अपनी मनमानी।

दिखने में सुंदर, वजन में हल्का,
सस्ता, मजबूत, टिकाऊ बनकर आया,
सब लोगों ने इसे जल्दी–जल्दी अपनाया।

किसी ने बनाए खिलौने, किसी ने बनाए बर्तन,
मिट्टी, पानी, अग्नि, वायु और धरती पर, हो रहा प्रदूषण।

दिखने लगे हैं इसके, चारों ओर बड़े–बड़े ढेर,
जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण और कैंसर जैसी बीमारियों ने,
रखा है सबको घेर।

दिखा दिया है इसने अब, अपना विकराल रूप,
जबसे बिगाड़ दिया है इसने पर्यावरण का स्वरूप।

घुटने लगा है दम, सांसें गई हैं थम,
अपनी दो पल की जरूरत के लिए,
क्यूं प्रदूषण फैलाते हैं हम।

पानी की बोतल, प्लास्टिक की पाइप और टूथब्रश का,
होता है 200 से 500 सालों में विघटन,
अब धरती माता को, होने लगी है इससे घुटन।

मचा रखी है इसने, पूरी दुनिया में हा–हाकार,
सच तो ये है कि, इंसान ही है इसका जिम्मेदार।

अब तो जागो...अब तो जागो... करो इसका बहिष्कार,
ढूंढो विकल्प, छोड़ो प्लास्टिक, करना होगा इसका,
पूरी निष्ठा से संहार।

प्लास्टिक की थैली नहीं, कपड़े का बैग है इसका विकल्प,
कल नहीं आज नहीं, अभी से लेंगे प्लास्टिक छोड़ने का संकल्प।

बिन्नी गुप्ता
अधिकारी,
आंचलिक कार्यालय गुरुग्राम

"सड़क पर बचपन"

दर–दर की ठोकर खाता वो
बचपन की मासूमियत को भुलाता वो,
पेट की आग बुझाने को,
अपने ही जज्बात जलाता वो।

घुटन भरी ज़िन्दगी से
छूट निकलने की प्यास में है,
दरख्तों के साये में पला ये जीवन
आशियाने की तलाश में है।

जिन पांवो ने अभी चलना भी ना सीखा
वो कुनबे का पेट पालने की चाह में हैं,
सर्दी हो, गर्मी हो या हों बारिश
वो बस सर छुपाने की आस में है।

इस मुफलिसी को किस्मत का नाम ना देना
वक्त बदला तो ज़ज्बात बदल जाएंगे
अंधियारे आसमान पर
चमकते सितारे भी आएंगे।

प्रवीण कुमार खेमका
प्रबंधक, प्रधान कार्यालय
मुद्रण एवं लेखन सामग्री विभाग

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति का शिमला दौरा

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति ने 21 अप्रैल, 2023 को बैंक की शिमला (हिमाचल प्रदेश) शाखा का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान शाखा में हो रहे कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग पर विस्तार से चर्चा हुई तथा माननीय सदस्यों ने निरीक्षण प्रश्नावली पर प्रसन्नता व्यक्त की।

निरीक्षण कार्यक्रम में बैंक की ओर से शाखा प्रबंधक शिमला श्री विवेक परिहार, आंचलिक प्रबंधक चंडीगढ़ श्री शैलेन्द्र सिंह परिहार, आंचलिक कार्यालय चंडीगढ़ में पदस्थ वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) सुश्री हरप्रीत कौर, महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री गजराज देवी सिंह ठाकुर तथा प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग में पदस्थ मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री निखिल शर्मा उपस्थित रहे।

जो व्यक्ति जितना अशिक्षित है, वह उतना ही गरीब है – पं. जवाहरलाल नेहरू।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति की
निरीक्षण बैठक
20 - 21 अप्रैल, 2023 - शिमला
:: संयोजक ::
punjab national bank

मोहन लाल

ई–कॉमर्स और जेम पोर्टल

गवर्नमेंट ई–मार्केट प्लेस (जीईएम) से वस्तुओं और सेवाओं की खरीद ने वित्तीय वर्ष 2022–2023 में ₹ 2 लाख करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया है। भारत में सार्वजनिक खरीद के लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म (जीईएम) की शुरुआत 9 अगस्त, 2016 को खरीदारों और विक्रेताओं के लिए निष्पक्ष और प्रतिस्पर्धी तरीके से खरीद गतिविधियों को पूरा करने हेतु समावेशी, कुशल और पारदर्शी मंच बनाने के उद्देश्य से की गई थी।

जीईएम पोर्टल लॉन्च होने के बाद शुरुआती वर्ष में करीब ₹ 400 करोड़ का कारोबार हुआ और दूसरे वर्ष जीईएम ने करीब ₹ 5,800 करोड़ का कारोबार किया। कोविड–19 के पीक वर्ष 2021 में जीईएम के माध्यम से कारोबार दो साल पहले लगभग ₹ 35,000 करोड़ से बढ़ा है और पिछले साल 2022 में तीन गुना बढ़कर ₹ 1,06,000 हो गया। पिछले पाँच साल में यह आंकड़ा ₹ 2 लाख करोड़ तक पहुँच चुका है। इस दृष्टि से देखा जाए तो भारत सरकार का यह प्रयोग सफल रहा है। 31 मार्च 2023 को समाप्त हुए वित्तीय वर्ष में जेम पोर्टल के माध्यम से किया गया कुल व्यापार बढ़कर ₹ 2 लाख करोड़ पहुँच चुका है ।

देश में लगभग ₹ 40 लाख करोड़ से अधिक की सरकारी खरीद (केंद्र और राज्य सरकारों के माध्यम से तथा सरकारी नियंत्रण वाली कंपनियों) की जाती है। सरकारी खरीद को पेपरलेस, कैशलेस और पारदर्शी बनाने हेतु भारत सरकार द्वारा ई–मार्केट प्लेस (जेम) पोर्टल का प्रारंभ किया गया। वर्ष 2014 से भारत सरकार ने डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया, स्टार्ट–अप इंडिया, स्किल इंडिया और इनोवेशन फंड जैसे विभिन्न पहलों की घोषणा की। ऐसे कार्यक्रमों के समय पर और प्रभावी कार्यान्वयन से देश में ई–कॉमर्स के विकास को बढ़ावा और समर्थन मिलने की संभावना काफी बढ़ी है।

ज्ञात रहे की सरकारी खरीद में जीईएम पारदर्शिता लाता है। जीईएम विक्रेता पंजीकरण, ऑर्डर प्लेसमेंट और भुगतान प्रसंस्करण में मानव इंटरफ़ेस को काफी हद तक समाप्त कर देता है जिसके कारण भ्रष्टाचार, भाई–भतीजावाद की संभावना शून्य हो जाती है। एक खुला मंच होने के नाते, जीईएम सरकार के साथ व्यापार करने की इच्छा रखने वाले वास्तविक आपूर्तिकर्ताओं के लिए कोई प्रवेश बाधा नहीं है। हर कदम पर, खरीदार, उसके संगठन के प्रमुख, भुगतान करने वाले अधिकारियों और विक्रेताओं दोनों को एसएमएस और ई–मेल सूचनाएं भेजी जाती हैं। पीएफएमएस और स्टेट बैंक मल्टी ऑप्शन सिस्टम (एसबीएमओपीएस) के साथ एकीकरण के माध्यम से जीईएम पर ऑनलाइन, कैशलेस और समयबद्ध भुगतान की सुविधा है। रेलवे, रक्षा, प्रमुख सार्वजनिक उपक्रमों और राज्य सरकारों की भुगतान प्रणालियों के लिए वेब–सेवा एकीकरण का विस्तार किया जा रहा है। निर्बाध प्रक्रियाओं और ऑनलाइन समयबद्ध भुगतान जिसे व्यय विभाग द्वारा भी अनिवार्य किया गया है, ने विक्रेताओं को विश्वास दिलाया है और समय पर भुगतान के लिए अधिकारियों को आगे बढ़ाने में शामिल उनकी 'प्रशासनिक' लागत को कम किया है।

गवर्नमेंट ई–मार्केट प्लेस (जेम) ने अक्टूबर 2019 में सेवाओं की एक श्रृंखला के लिए कैशलेस, पेपरलेस और पारदर्शी भुगतान प्रणाली की सुविधा के लिए यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए। डिजिटल इंडिया मुहिम के तहत डिजिटलीकरण को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने विभिन्न पहल शुरू की जैसे कि उमंग, स्टार्ट–अप इंडिया पोर्टल, भारत

शुरुआत करने का तरीका है कि बातें बंद करें और काम शुरू करें – वाल्ट डिज्नी।

इंटरफेस फॉर मनी (भीम) आदि। अक्टूबर 2020 में, वाणिज्य और उद्योग मंत्री, श्री पीयूष गोयल ने सार्वजनिक खरीद पोर्टल, जेम पर पंजीकरण करने और सरकारी संगठनों और सार्वजनिक उपक्रमों को सामान और सेवाएं प्रदान करने के लिए स्टार्ट–अप को आमंत्रित किया। ई–कॉमर्स में विदेशी निवेशकों की भागीदारी बढ़ाने के लिए, भारत सरकार ने ई–कॉमर्स मार्केट प्लेस मॉडल में एफडीआई की सीमा को 100% (बी2बी मॉडल में) तक बढ़ा दिया। 5 जी के लिए फाइबर नेटवर्क शुरू करने में सरकार और निजी क्षेत्र द्वारा किए गए भारी निवेश से भारत में ई–कॉमर्स को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी।

भारत सरकार के ऊर्जा मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय तथा पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय द्वारा वित्तीय वर्ष 2022–23 के दौरान क्रमशः ₹ 30523, ₹ 28732 और ₹ 28150 करोड़ की सेवा एवं वस्तु की खरीद की है। इन बड़े खरीदों के साथ–साथ सरकारी स्वामित्व वाली कंपनी डीपीएसयू ने वित्तीय वर्ष 2022–23 के दौरान ₹ 2642 करोड़ से अधिक सेवा व वस्तु का व्यापार अर्थात अपने उत्पादों को इस मंच से सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों / मंत्रालयों को बेचा भी है।

सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) में देखा जाए तो एनटीपीसी ने सर्वाधिक ₹ 24,165 करोड़ की खरीदारी जेम के माध्यम से की है। इन बड़े–बड़े खरीदारों के साथ–साथ छोटे–छोटे खरीदारों के माध्यम से वित्तीय वर्ष 2022–23 की समाप्ति पर जेम, व्यापार के मामलों में कुल ₹ 2 लाख करोड़ के मनोवैज्ञानिक स्तर को पार कर चुका है।

भारत सरकार के भिन्न–भिन्न विभागों और उनके उपक्रमों द्वारा जीईएम के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा खरीदारी को बढ़ावा दिया जा रहा है। सरकारी खरीद के कुल फलक को देखे तो जेम पोर्टल के माध्यम से ₹ 2 लाख करोड़ का व्यापार, भारत सरकार के भिन्न–भिन्न विभागों और उनके उपक्रमों द्वारा खरीद के लगभग 5 प्रतिशत के बराबर बैठता है अतः आने वाले वर्षों में जेम पोर्टल के माध्यम से व्यापार में बढ़ोत्तरी की कई गुना संभावना प्रतीत हो रही है। भारत सरकार के भिन्न–भिन्न विभागों और उनके उपक्रमों के कुल खरीद का 60–70 प्रतिशत की खरीद, जेम पोर्टल के माध्यम से की जा सकती है। अर्थात मेड इन इंडिया प्रोडक्ट की मांग बढ़ेगी जिससे रोजगार बढ़ेगा ।

जीईएम पोर्टल का मुख्य उद्देश्य खरीदारों और विक्रेताओं के लिए एक सामान्य इलेक्ट्रॉनिक बाज़ार में आना और सरकारी सार्वजनिक खरीद के व्यवसाय को सहज और पारदर्शी तरीके से संचालित करना बहुत सुविधाजनक बनाना था। इस तरह की प्रक्रिया से खरीदारों और विक्रेताओं दोनों को लाभ मिलने की उम्मीद है। खरीदारों और विक्रेताओं के लिए जीईएम पोर्टल पर सूचीबद्ध लाभ और उद्देश्य इस प्रकार हैं :

खरीदारों के लिए लाभ और उद्देश्य

- ❖ वस्तुओं / सेवाओं की अलग–अलग श्रेणियों के लिए उत्पादों की समृद्ध सूची।
- ❖ खोज, तुलना, चयन और सुविधा खरीदें।
- ❖ आवश्यकता पड़ने पर ऑनलाइन सामान और सेवाएं खरीदना।
- ❖ पारदर्शी और खरीदने में आसानी।
- ❖ सतत विक्रेता रेटिंग प्रणाली।
- ❖ आपूर्ति और भुगतान खरीदने तथा निगरानी के लिए उपयोगकर्ता के अनुकूल डैश बोर्ड।
- ❖ आसान वापसी नीति।

(सौजन्य जीईएम पोर्टल)

जीएफआर 2005 नियम 141 'क' का संशोधन : नियम 141 'क' में कहा गया है कि सभी शासकीय विभाग जीईएम पोर्टल पर सूचीबद्ध किसी भी वस्तु को ₹ 50,000 की राशि तक बिना किसी अन्य खरीद औपचारिकताओं को पूरा किए खरीद सकेंगे। यह ₹ 50,000 से अधिक के सामान की खरीद के लिए पोर्टल पर चयनित आपूर्तिकर्ताओं के बीच त्वरित बोली के माध्यम से और सक्षम प्राधिकारी द्वारा मूल्य और गुणवत्ता के दावे के माध्यम भी प्रदान करता है। उपरोक्त संशोधन से सरकारी विभाग के लिए नियमित प्रकृति के सामानों की खरीद के समय में काफी कमी आई है।

- ✓ जीएफआर 2005 का नियम 141–'क', जीएफआर 2017 के नियम 149 द्वारा अधिक्रमित
- ✓ जीईएम भुगतान और समय–सीमा पर कार्यालय ज्ञापन दिनांक 20 सितंबर, 2016
- ✓ बोली प्रस्तुत करने के लिए न्यूनतम तीन सप्ताह का समय दिया जाना चाहिए (नियम 161)
- ✓ तत्काल आवश्यकता के मामलों में सीमित निविदा पूछताछ द्वारा खरीद (नियम 162)
- ✓ सक्षम प्राधिकारी या तकनीकी समिति द्वारा आयोजित की जाने वाली तकनीकी बोलियों का मूल्यांकन (नियम 163,164)
- ✓ बोली प्रतिभूति (ईएमडी) खरीदी जाने वाली वस्तुओं के अनुमानित मूल्य के दो प्रतिशत से पांच प्रतिशत के बीच होनी चाहिए (नियम 170)
- ✓ प्रदर्शन प्रतिभूति बोली दस्तावेजों में निर्दिष्ट अनुबंध के मूल्य के पांच से दस प्रतिशत की राशि के लिए होनी चाहिए। (नियम 171)

✓ सेवाओं का मूल्य ₹ 10 लाख से कम होने पर सीमित निविदा पूछताछ द्वारा सेवाओं की खरीद (नियम 201)

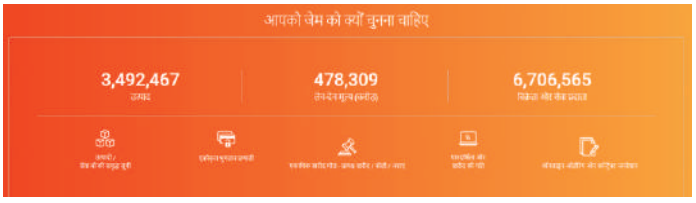

इसी प्रकार, सभी आपूर्तिकर्ताओं को ऑनलाइन भुगतान में शामिल करने के लिए एक कार्यालय ज्ञापन के माध्यम से 1983 के भुगतान और प्राप्ति नियम में संशोधन किया गया है। इस प्रकार सभी विभागों में आहरण और संवितरण अधिकारी (डीडीओ) अब आपूर्तिकर्ताओं को ऑनलाइन सीधे भुगतान करने में सक्षम होंगे जिससे की गई आपूर्ति के भुगतान के समय में काफी कमी आएगी। सार्वजनिक खरीद किसी देश के जीडीपी के 15–20% के बराबर होती है और इसलिए कुशलतापूर्वक सार्वजनिक खरीद प्रक्रिया चलाना महत्वपूर्ण है। सार्वजनिक खरीद का मानकीकरण एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। भारत में प्रचलित सार्वजनिक खरीद व्यवस्था, खंडित प्रक्रियाओं और नीतियों की विशेषता है जो फाइलों में संचालित होती हैं और इसके लिए उच्च स्तर के मानवीय हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है।

हमारे देश की अर्थव्यवस्था व सरकारी खरीद के लिए एक अच्छी तरह से काम करने वाली और कुशल सार्वजनिक खरीद प्रणाली, सरकारी व्यय यानी सार्वजनिक खरीद के रणनीतिक और कुशल आबंटन और उपयोग में सुधार करके विकास प्रक्रिया में मदद करती है। गवर्नमेंट ई मार्केट प्लेस (जेम) की उत्पत्ति / विकास इस प्रकार देश में सार्वजनिक खरीद प्रक्रिया में एक कदम बदलाव लाने और डिजिटल की शक्ति का लाभ उठाकर ई–गवर्नेंस के युग की शुरुआत करने की आवश्यकता से प्रेरित है। गवर्नमेंट ई मार्केट प्लेस (जेम) प्लेटफॉर्म के शुरुआत के पीछे उद्देश्य को देखते हुए यह परिकल्पना की गई है कि 2 –3 साल की अवधि में करीब ₹ 1 लाख करोड़ मूल्य के वार्षिक लेन–देन किए जा सकते हैं। चूंकि नीति व व्यय संबंधी विषय के मामले में भारत में खरीद परिदृश्य काफी विविध है इसलिए केंद्र सरकार (जैसे केंद्रीय मंत्रालयों, विभागों, केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों) के अंतर्गत आने वाले खरीदारों के लिए उच्च लक्ष्य निर्धारित किए गए है ।

वार्षिक लेन–देन मूल्य और दीर्घावधि (10–12 वर्ष) में यह संभावित रूप से लेन–देन मूल्य, भारत के नाममात्र जीडीपी के 5% तक कब्जा कर सकता है। वैश्विक सर्वश्रेष्ठ–इन–क्लास ई–प्रोक्योरमेंट पोर्टल्स जैसे कि चिली कॉम्परा, सिंगापूर GeBIZ और दक्षिण कोरिया (KONEPS) के बेंचमार्क के अनुरूप है, जो अपने संबंधित प्लेटफार्मों द्वारा समर्थित ऑनलाइन लेनदेन के माध्यम से अपने संबंधित देशों के सकल घरेलू उत्पाद के 4.5% – 6% के बीच कब्जा कर चुका है।

सही मायने में कैशलेस खरीद खरीद प्रक्रिया सुनिश्चित करने के लिए जेम प्लेटफॉर्म 100% ऑनलाइन भुगतान सपोर्ट करता है। यह न केवल प्रक्रिया को कुशल व प्रभावी बनाएगा बल्कि समय पर भुगतान आश्वासन में भी सुधार करेगा। इसलिए, प्लेटफॉर्म अपने उपयोगकर्ताओं के लिए सुविधा और उपयोगिता को अधिकतम करने के लिए कई ऑनलाइन भुगतान मोड का समर्थन करता है। यह प्लेटफॉर्म ई–ईएमडी और ई–पीबीजी का भी समर्थन करता है ताकि 100% ऑनलाइन भुगतान की अपनी मंशा को पूरा किया जा सके। ई–कॉमर्स उद्योग भारत में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) को वित्त पोषण, प्रौद्योगिकी और प्रशिक्षण के माध्यम से सीधे प्रभावित कर रहा है और अन्य उद्योगों पर भी इसका अनुकूल व्यापक प्रभाव है। भारतीय ई–कॉमर्स उद्योग ऊपर की ओर विकास पथ पर है और वर्ष 2034 तक अमेरिका को पीछे छोड़ते हुए दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा ई–कॉमर्स बाजार बनने की उम्मीद है। डिजिटल भुगतान, हाइपर–लोकल लॉजिस्टिक्स, एनालिटिक्स संचालित ग्राहक जुड़ाव जैसे प्रौद्योगिकी सक्षम नवाचार और डिजिटल विज्ञापन इस क्षेत्र में विकास का समर्थन करेंगे। ई–कॉमर्स क्षेत्र में वृद्धि से रोजगार को भी बढ़ावा मिलेगा, निर्यात से राजस्व में वृद्धि होगी, राजकोष द्वारा कर संग्रह में वृद्धि होगी और ग्राहकों को लंबी अवधि में बेहतर उत्पाद और सेवाएं प्रदान की जाएंगी।

–राजभाषा अधिकारी
प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग

आपकी कलम से...

मैं, राजभाषा अंकुर, मार्च–2023 अंक में प्रकाशित सेवानिवृत्त स्टाफ सदस्य पी षणमुखम के सिख धर्म से संबंधित लेख (मूल तमिल लेख और उसका हिंदी अनुवाद) को पढ़कर अभिभूत हूं। विषय पर उनका समर्पण और ज्ञान उनके बारे में बहुत कुछ कहता है। ईश्वर (बाबाजी) उन्हें हमेशा आशीर्वाद दें। कृपया उन तक मेरी भावनाएं प्रेषित करें।

–सी एस भाटिया
सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रबंधक

ज्ञानी वह है जो वर्तमान को ठीक प्रकार समझे और परिस्थिति के अनुसार आचरण करे – विनोबा भावे।

प्रीति जैन

संपर्क भाषा हिंदी और इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यम

भारत में हिंदी का उपयोग सदियों से होता आ रहा है परंतु आज से लगभग 74 वर्ष पूर्व 14 सितंबर, 1949 को देवनागरी में लिखे जाने वाली हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। वस्तुतः ध्यान रखने योग्य बात यह है कि किसी भी देश का विकास और जनतंत्र में समन्वय तब तक संभव नहीं है जब तक कोई एक भाषा समूचे देश को एक सूत्र में न पिरो दे। हिंदी पहले राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित हुई, उसके बाद संवैधानिक रूप से इस राजभाषा का दर्जा दिया गया किंतु इनसे परे एक बात स्पष्ट है कि हिंदी, व्यावहारिक तौर पर भारत की प्रमुख संपर्क भाषा बनी हुई है। भारत के साथ संपर्क और यहाँ अपना मेलजोल बढ़ाने के लिए अमेरिका, चीन तथा यूरोप के प्रमुख देश भी अपने यहाँ हिंदी के अध्ययन की व्यवस्था करने लगे हैं। विदेशों से बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं, केंद्रीय हिंदी संस्थान और अन्य शिक्षक संस्थाओं में हिंदी पढ़ने के लिए भारत आते रहते हैं। अतीत में भारत के जिन दक्षिण राज्यों में हिंदी विरोधी आंदोलन हुए थे, अब वहाँ के नेता भी पूरे देश में अपनी बात रखने के लिए हिंदी में बोलने को आतुर दिखते हैं। इसके अलावा देश–विदेश के विभिन्न महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा या साहित्य में स्नातक, स्नातकोत्तर करने वाले छात्रों की संख्या भी निरंतर बढ़ती जा रही है।

भारत की संपर्क भाषा और राजभाषा के रूप में हिंदी के विकास की प्रक्रिया संविधान बनने के बहुत पहले ही स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान ही शुरू हो चुकी थी। जब भारत के स्वतंत्रता सेनानियों ने देखा कि हम शायद अंग्रेजों से आजाद तो हो जाएंगे परंतु अंग्रेजी से नहीं। इस आधार पर उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि हमें भी अपनी एक राष्ट्रभाषा बनानी ही पड़ेगी जो मुख्यतः पूरे देश को एक आवाज के साथ जोड़ दें। वास्तविकता तो यह है कि हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की पहल सिर्फ हिंदी भाषी नेताओं ने ही नहीं की बल्कि महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, सी. राजगोपालाचारी और सुभाष चंद्र बोस सरीखे हिंदीतर लोगों की ओर से की गई थी। महात्मा गाँधी, देश भर में अपने भाषण हिंदी में ही दिया करते थे। सुभाष चंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज की स्थापना की तो देश के विभिन्न क्षेत्रों के सैनिकों को जोड़ने का काम हिंदी के माध्यम से ही किया गया। गाँधीजी ने आजादी से पहले ही गैर–हिंदी भाषी राज्यों विशेषकर दक्षिण भारत में हिंदी प्रचारिणी सभाएं बनाई। इन सभाओं के माध्यम से हजारों हिंदी सेवी तैयार हुए जो देश भक्ति की भावना से हिंदी का प्रचार–प्रसार और शिक्षण करते थे किंतु आज के संदर्भ में देखें तो हिंदी के प्रचार–प्रसार में सबसे अधिक योगदान इलेक्ट्रॉनिक मीडिया यथा रेडियो, टेलीविज़न, इंटरनेट पर यू–ट्यूब, ऑनलाइन हिंदी समाचार पत्र इत्यादि कर रहे हैं।

एक समय था जब पढ़े–लिखे होने का मतलब था अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होना इसलिए आजादी के समय बड़े या तथाकथित राष्ट्रीय समाचार–पत्र अंग्रेजी में ही छपते थे। अंग्रेजी के संपर्क भाषा ना होने के कारण ही साक्षरता की दर जो किसी प्रभावशाली और प्रगतिशील देश की होनी चाहिए थी वह भारत तब प्राप्त नहीं कर सका था। कुछ समय पश्चात शिक्षा और साक्षरता हेतु प्रचार के सही दिशा में किए गए प्रयासों के फलस्वरूप यह अवधारणा बदलने लगी तथा हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं के अखबार पढ़ने वाले की संख्या में इजाफा होने लगा। यह प्रक्रिया दुतरफा चली, एक ओर जहाँ साक्षरता दर बढ़ने से हिंदी पत्र–पत्रिकाएं पढ़ने के इच्छुक लोगों की संख्या में वृद्धि

हुई, वहीं दूसरी ओर हिंदी अखबार की प्रसार संख्या बढ़ने लगी। हिंदी अखबारों ने नए–नए प्रयोग किए और समाचार को औपचारिकता एवं रुढ़िवादी छवि के घेरे से निकालकर स्थानीय रंगत और रोचकता प्रदान की गई। जिला स्तर के विशेष संस्करण निकालने से अखबार पढ़ना केवल उच्च शिक्षित वर्ग का ही नहीं निम्न आय वर्ग के लोगों का भी शौक बन गया परंतु फिर भी इस प्रिंट मीडिया का दायरा सीमित था। ग्रामीण बहुल देश होने के कारण भारत में प्रिंट मीडिया की विभिन्न पत्र–पत्रिकाएं गाँवों में नहीं पहुंच पाती थी और यही कारण था कि गाँव के लोग अपने आप को मुख्यधारा से चाहे अनचाहे कटा हुआ पाते थे। इस खाई को पाटने का मुख्य कार्य इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने किया और यह कार्य आज तक बदस्तूर जारी है।

जब तक इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, प्रभारी तौर पर भारत में स्थापित नहीं था तब तक हिंदी और इसे प्रयोग करने वाले लोगों को उच्च वर्ग हीन दृष्टि से देखता था परंतु जैसे–जैसे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने घर–घर में पैठ बनाई, सभी लोगों का हिंदी के प्रति नज़रिया बदलता चला गया। जल्द ही समाज में अग्रणी भूमिका अदा करने वाले लोगों को इस बात की अनुभूति हो गई कि देश के हिंदी द्वारा एकीकृत हो जाने पर ही उनका, समाज का और संपूर्ण देश का हित है इसलिए अब अखबार, रेडियो, टीवी तथा पत्र–पत्रिकाओं में हिंदी भाषा में विज्ञापन देने की होड़ लगी रहती है।

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को संपर्क भाषा बनाने में रेडियो की उल्लेखनीय भूमिका रही। आकाशवाणी ने समाचार, विचार, शिक्षा, सामाजिक सरोकार, संगीत, मनोरंजन आदि सभी स्तरों पर अपने प्रसारण के माध्यम से हिंदी को देश के कोने–कोने तक पहुंचाया। इसमें हिंदी फिल्मों और फिल्मी गीतों की विशेष भूमिका रही। हिंदी गीतों की लोकप्रियता भारत की सीमाओं को पार कर रूस, चीन और समुद्र पार अन्य देशों तक जा पहुंची। आकाशवाणी के विविध भारती सेवा और अन्य कार्यक्रमों के अंतर्गत प्रसारित फिल्मी गानों ने हिंदी को देशभर के लोगों की जुबान पर ला दिया। हिंदी के प्रचार–प्रसार में फिल्मों की उल्लेखनीय भूमिका रहीं किंतु फिल्मों से अधिक लोकप्रिय उनके गीत रहे हैं। अब वही काम निजी एफएम चैनल कर रहे हैं। एफएम चैनल हल्के–फुल्के कार्यक्रमों, वाद–संवाद और हास्य–प्रहसन के जरिए हिंदी का प्रचार कर रहे हैं। इस समय आकाशवाणी के सैकड़ों केंद्र व ट्रांसमीटर, लगभग 400 एफएम और सामुदायिक रेडियो चैनल का प्रसारण कर रहे हैं। इनमें से अधिकतर चैनल हिंदी में कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। रेडियो प्रसारण में हिंदी के महत्व को इस प्रकरण से समझा जा सकता है कि जब मुंबई में एफएम चैनलों के लाइसेंस दिए गए तो पहले आधे स्टेशन अंग्रेजी प्रसारण के लिए निर्धारित थे किंतु कुछ ही महीने में वे हिंदी में प्रसारण करने लगे क्योंकि अंग्रेजी श्रोता अपेक्षाकृत बहुत कम थे। मनोरंजन के अलावा आकाशवाणी के समाचार, खेल कार्यक्रम, प्रतियोगिताओं का आंखों देखा हाल तथा किसानों, मजदूरों और बाल व महिला विकास समर्थित कार्यक्रमों ने हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान दिया।

मीडिया का सबसे मुखर और प्रभावशाली आकर्षक माध्यम टेलीविजन माना जाता है। टेलीविजन श्रव्य के साथ–साथ दृश्य भी दिखाता है इसलिए यह अधिक रोचक है। भारत में अपने आरंभ से लगभग 30 वर्ष तक टेलीविजन की प्रगति धीमी रही किंतु अस्सी व नब्बे के दशक में दूरदर्शन ने राष्ट्रीय कार्यक्रम और समाचारों के प्रसारण के जरिए हिंदी को जनप्रिय बनाने में काफी योगदान दिया। नब्बे के दशक में मनोरंजन तथा समाचार के निजी उपग्रह चैनलों के पदार्पण के उपरांत यह प्रक्रिया और तेज हो गई। रेडियो की तरह टेलीविजन ने भी मनोरंजक कार्यक्रमों में फिल्मों का भरपूर उपयोग किया और फीचर फिल्मों, वृत्तचित्रों तथा फिल्मी गीतों के प्रसारण से हिंदी भाषा को देश के कोने–कोने तक पहुंचाने के सिलसिले को आगे बढ़ाया। टेलीविजन पर सामाजिक, पौराणिक, एतिहासिक, पारिवारिक तथा धार्मिक विषयों को लेकर बनाए गए हिंदी धारावाहिक घर–घर में देखे जाने लगे। रामायण, महाभारत, भारत एक खोज जैसे धारावाहिक न केवल हिंदी प्रचार में सहायक बने वरन राष्ट्रीय एकता के उद्घोषक के रूप में सामने आए। देखते ही देखते टीवी कार्यक्रमों से जुड़े लोग फिल्मी सितारों की तरह चर्चित और विख्यात हो गए। समूचे देश में टेलीविजन कार्यक्रमों की लोकप्रियता की बदौलत देश के हिंदीतर भाषी, हिंदी समझने और बोलने लगे। इस तरह यह टेलीविजन, हिंदी को संपर्क भाषा बनाने की मशाल लेकर अगुआ बन गया। 'कौन बनेगा करोड़पति' जैसे कार्यक्रमों ने लगभग पूरे देश को बांधे रखा। हिंदी में प्रसारित ऐसे कार्यक्रमों में पूर्वोत्तर राज्यों, जम्मू–कश्मीर और दक्षिण राज्यों के प्रतिनिधियों ने भी बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया और

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए – महावीर प्रसाद द्विवेदी।

इस तथ्य को दृढ़ता से उजागर किया कि हिंदी की पहुंच समूचे देश में है। विभिन्न चैनलों द्वारा अलग–अलग आयु वर्ग के लोगों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के सीधे प्रसारण वाले कार्यक्रमों में भी अनेक हिंदीतर प्रतिभागियों ने हिंदी में गीत गाकर प्रथम स्थान प्राप्त किए। इन कार्यक्रमों में श्रोताओं द्वारा मतदान करने के नियम ने इनकी पहुंच को और विस्तृत कर दिया। हिंदी फिल्मों की तरह टेलीविजन के हिंदी कार्यक्रमों ने भी भौगोलिक, भाषाई तथा सांस्कृतिक सीमाएं तोड़ दी है।

हिंदी समाचार चैनल भी सबसे अधिक दर्शकों द्वारा देखे जाते हैं। हालांकि इन दिनों हिंदी समाचार चैनल, समाचारों के स्तरीय प्रसारण के स्थान पर अविश्वसनीय और सनसनीखेज़ खबरें प्रसारित करने के लिए आलोचना झेल रहे हैं किंतु फिर भी टीआरपी के मामलों में वे अंग्रेजी चैनलों से कहीं आगे हैं। इस समय देश से होने वाले चैनलों की संख्या लगभग 400 है जिनमें से लगभग आधे खबरिया चैनल है जो हिंदी कार्यक्रम या समाचार प्रसारित करते हैं। विदेशों से अपलिंक होने वाले चैनलों की संख्या भी 50 से अधिक है। इस संदर्भ में यह जानना दिलचस्प होगा कि स्टार, सोनी और जी जैसे विदेशों से अपलिंक होने वाले चैनलों ने जब भारत में प्रसारण आरंभ किया तो उनकी योजना अंग्रेजी कार्यक्रमों को प्रसारित करने की थी किंतु बहुत जल्दी उन्होंने महसूस किया कि वे हिंदी कार्यक्रमों के जरिए ही इस देश में टिक सकते हैं और ये चैनल, हिंदी चैनलों में परिवर्तित होते गए। समाचार प्रसारण में हिंदी के बढ़ते महत्व का ही प्रताप है कि रेडियो और टेलीविजन की खबरों के लिए सभी विशेषज्ञ और नेता अपने साउंडबाइट, टूटी–फूटी और अंग्रेजी मिश्रित ही सही, हिंदी में ही देने का प्रयास करते हैं।

जब इंटरनेट ने भारत में पाँव पसारने शुरू किए तो यह आशंका व्यक्त की गई थी कि कंप्यूटर के कारण देश में अंग्रेजी का बोलबाला शुरू हो जाएगा किंतु यह धारा निर्मूल साबित हुई। आज हिंदी वेबसाइट तथा ब्लॉक ना केवल धड़ल्ले से चल रहे हैं बल्कि देश के साथ–साथ विदेशों के लोग भी हिंदी में सूचनाओं का आदान–प्रदान कर रहे हैं। इंटरनेट के यूट्यूब पर चलने वाले विभिन्न प्रकार के हिंदी धारावाहिकों, लघु हिंदी फिल्मों, हिंदी गानों, ज्ञानवर्धक हिंदी वीडियों, विज्ञान की नवीनतम जानकारी से लोग घर बैठे लाभान्वित हो रहे हैं जो अभी तक इतनी आसानी से संभव नहीं हो पाया था। हिंदी की उपयोगिता को समझते हुए विश्वप्रसिद्ध खोज वेबसाइट 'गूगल' ने भी अपने आपको भारत में अंग्रेजी के बाद सबसे पहले हिंदी में ही प्रस्तुत किया। वैसे भी हमेशा से यही माना जाता रहा है कि नवीन खोजों के लिए व्यक्ति द्वारा उसकी अपनी मातृभाषा में ही सूचना और ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। इसके बाद लोगों द्वारा इंटरनेट पर सभी जानकारियां हिंदी भाषा में सर्च की जाने लगी।

हिंदी को लेकर कुछ लोग यह शिकायत करते हैं कि मीडिया व इंटरनेट के कारण हिंदी भाषा विकृत हो रही है और इसका मूल स्वरूप नष्ट हो रहा है। इन सबसे परे हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भाषा एक बहती नदी है और जब उसका अधिक इस्तेमाल होगा तो उसके स्वरूप में कुछ न कुछ बदलाव अवश्य आएगा। वास्तव में यह बदलाव विकार नहीं संस्कार है। अक्सर कहा जाता है कि मीडिया में इस्तेमाल होने वाली भाषा हिंदी नहीं 'हिंग्लिश' है। इसी तर्क के आधार पर देखा जाए तो आज अंग्रेजी में भी हिंदी भाषा का खूब समावेश हो चुका है। अंग्रेजी मीडिया और विज्ञापनों में हिंदी शब्दों, मुहावरों व उक्तियों का खुलकर प्रयोग होने लगा है। यदि मीडिया की भाषा परिनिष्ठित हिंदी होती तो क्या इतने अधिक हिंदीतर लोग रेडियो, टीवी या इंटरनेट के कार्यक्रमों में अपनी बात रख पाते? हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ाने के लिए उसमें स्वच्छंदता लाना आवश्यक है। यह ऐतिहासिक सत्य है कि जब को भी कोई भाषा पुराने तटबंध को तोड़कर नए क्षेत्र में प्रवेश करती है तो शुद्धतावादी तत्व उससे चिंतित हो जाते हैं। सच तो यह है कि हिंदी इस समय संपर्क भाषा के रूप में स्वीकार्यता के राजमार्ग पर सरपट दौड़ रही है और मीडिया इस दौड़ को और अधिक गतिशील बना रहा है। आज का यथार्थ यह है कि जिस तरह हिंदी को अपने प्रचार के लिए इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की जरूरत है उसी तरह इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को अपने विस्तार के लिए हिंदी की आवश्यकता है।

–अधिकारी
आधारशीला शाखा, दिल्ली

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति का लखनऊ दौरा

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा 15 जून, 2023 को बैंक के आंचलिक कार्यालय लखनऊ का राजभाषा निरीक्षण किया गया। बैंक की ओर से निरीक्षण कार्यक्रम में आंचलिक प्रबंधक लखनऊ श्री विनय खंडेलवाल, वरिष्ठ प्रबंधक श्री सुधांशु शुक्ला, राजभाषा अधिकारी श्री वैभव कुमार, महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री गजराज देवी सिंह ठाकुर तथा प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग में पदस्थ मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री निखिल शर्मा उपस्थित रहे।

निरीक्षण के दौरान माननीय सदस्यों ने शाखा में राजभाषा कार्यान्वयन पर प्रसन्नता व्यक्त की तथापि अपेक्षाकृत बेहतर परिणामों के लिए बैंक का मार्गदर्शन किया और यथोचित निर्देश दिए।

इतिहास में जो सत्य है वही अच्छा है और जो असत्य है वही बुरा है - जयचंद्र विद्यालंकार।

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति का लखनऊ दौरा

शिवशरण कुमार 'शिव'

मुझे ऑफिस जाना है।

बहुत दिनों के बाद आज शिव को स्कूल जाना है। मुझे भी जल्दी निकलना था, विश्वा सो रहे थे। जरा जल्दी उठ भी जाओ, तुम्हें शिव को स्कूल छोड़ना है। तो————! अरे, कैसी बात करते हो! तुम्हें पता भी है कि आज उसकी परीक्षा है। हां, बाबा! मुझे पता है। तुम जाओ, मैं उसे स्कूल छोड़ दूंगा और सुनो, खाना जोमेटो से ऑर्डर कर लेना। हाँ, ठीक है, ओके बाय! बाय शिव! मम्मा————————! बेटा ————————! (अपना बैग उठाकर हाथ से बाय का इशारा करती हुई अमृता ड्यूटी पर चली गई। शिव टकटकी लगाकर माँ को देखता रहा)

हैलो, निरंजन जल्दी आओ। यार हमें आर्मी कैंप नौ बजे तक पहुँचना है। हां, मैम बस टैक्सी ले रहा हूँ। कितना टाइम लगेगा? आपके घर तक दस मिनट दिखा रहा है। ओह, शीट यार! बोलो तेज भगाने के लिए। अरे भैया, गाड़ी ही है, हवाई जहाज थोड़े है। लो सर जी हम आ गए। उन्हें बोलो मेन रोड पर आ जाने के लिए। मैम, शिव मंदिर के ठीक सामने आ जाओ, मैं यहीं हूँ। भैया रोको, मैम आ गई। गुडमॉर्निंग मैम! गुडमॉर्निंग निरंजन! भैया थोड़ा फास्ट चलो। आधा घंटा तो लग जाएगा। ओके, यार देखो, कितनी ग्रीनरी है, सड़कें कितनी अच्छी हैं, ना कोई जाम और ना कोई गंदगी। मैम, कैंट एरिया का अपना प्रशासन होता है। कितना हुआ भैया ? थ्री सिक्स्टी। लो भैया। निरंजन देखो किधर से इंट्री है?

सर (आर्मी से बात करते हुए) हम दोनों जॉब मेला में भाग लेने बैंक से आए हैं। ओके, आप रजिस्टर पर एंट्री कर दीजिए और हाफ किलोमीटर आगे चलकर राइट ले लीजिएगा। थैंक यू सर। अमृता और निरंजन दोनों कदमताल करते हुए आगे बढ़ रहे थे। हर जगह नयनाभिराम सिनरी (दृश्य), देशभक्ति के वाक्य लिखे हुए थे, कुछ और आगे बढने पर देशभक्ति गाने भी कर्ण प्रिय होने लगा – जहां डाल–डाल पर सोने की ..... । आधा किलोमीटर की थकान कुछ आहट देते उससे पहले ही सजा–संवारा प्रवेश द्वार दिखने लगा, हर जगह स्वागत में जवान खड़े थे। वेलकम, मैम एंड सर! थैंक यू (अमृता और निरंजन एक साथ) सर! आप मिस अमृता, बैंक से हैं ? जी। आपके कितने कैंडीडेट हैं? तेरह। ओके, आप दोनों फर्स्ट रो में बैठिएगा। थैंक यू, सर। अमृता और निरंजन दोनों सेमिनार हॉल में प्रथम पंक्ति में बैठ जाते हैं। सामने वेल डेकोरेटेड मंच पर दो बड़े–बड़े स्क्रीन पर लिखा है– जॉब मेला 2022 में आपका हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन है। थोड़ी देर में केंद्रीय राज्य मंत्री जी आते हैं और कुछ लोगों को अपने हाथ से जॉब प्रमाण–पत्र देते हैं। उसके बाद अन्य संस्था के प्रतिनिधि जॉब प्रमाण–पत्र देते हैं। इसी क्रम में अमृता भी बैंक की तरफ से सात लोगों को जॉब प्रमाण–पत्र देती है।

मिस अमृता, प्लीज कम अप ऑन द स्टेज। निरंजन, फोटो अच्छे से क्लिक करना। जी! अमृता भाग्यविधाता की तरह मुस्कुराती हुई स्टेज की ओर एक–एक पग बढ़ा रही है। तेरह न सही लेकिन सात लोगों के घर में आज

अकर्मण्यता के जीवन से यशस्वी जीवन और यशस्वी मृत्यु श्रेष्ठ होती है - चंद्रशेखर वेंकट रमण।

खुशी के दीये जलेंगे। निरंजन भी हर एंगल से खुशी के क्षण को कैद कर रहा था। अमृता एक–एक करके सभी सात लोगों को जॉब प्रमाण–पत्र देने के बाद अपनी सीट पर आकर बैठ जाती है। सेना का एक जवान नजदीक आकर– आप दोनों लंच ले लीजिए। जी! दोनों वहाँ का आतिथ्य देखकर प्रफुल्लित हो गए। थोड़ी देर के लिए देश के प्रति अनन्य प्रेम में डूब गए। काश, हमें भी यही सम्मान मिलता! एक फोटो जरा यहाँ से खींचना। जी! मैं तुम्हारी पिक लेती हूँ झंडे के पास से। जी, दोनों खुशी–खुशी राष्ट्र के प्रति सम्मान में गुनगुनाते हुए बाहर आने लगे। हर मोड़ पर सेना का जवान–थैंक यू, मैम एंड सर, कम अगेन! अमृता–थैंक यू सर, फॉर वेल मैनेजमेंट!

यार तेरह लोगों में से सात लोग ही आए। बहुत बड़ी विडम्बना है मैम। एक ओर दिन–प्रतिदिन बढ़ती बेरोजगारी दूसरी ओर बैंक जॉब दे रहा था तो छः लोग आए ही नहीं ? वर्क कल्चर के कारण ऐसा हो रहा है यार (बात करते–करते मेन रोड पर आ गए)। जॉब मेले के बाद दोनों को अपने कार्यालय जाना था।

निरंजन, बादाम शेक लेते हैं? हैलो, विश्वा! तुम्हारे लिए बादाम शेक ले लूँ ? नहीं–नहीं, बस इसी रूट से आ जाओ, अगले कट पर मिलूंगा। शिव को साथ ला रहे हो ना! हां, बाबा! यार एक बात बताऊँ? आज तो खाना भी नहीं बनाया। तब तो सर (विश्वा) अभी भूखे होंगे? हां, यार! ओह, मैम आप भी न.....। मैं क्या करती, जल्दी आना जो था। टहलते–टहलते दोनों उस कट के पास पहुँचकर एक पेड़ की छाया में खड़े होकर इंतजार करने लगे। निरंजन, ऑटो वाले को पूछना, सेक्टर 63 तक कितना लेगा? मैम, साढ़े तीन सौ मांग रहा है। रहने दो! विश्वा को बोलूंगी शिबू को घर छोड़ने के बाद हमें ऑफिस तक छोड़ दे।

अपनी गाड़ी को देखते ही अमृता की नजर शिव पर पड़ी! अमृता का आधा शरीर गाड़ी के बाहर और आधा अंदर, तभी शिव गोद में सवार हो गया – हाय शिबू! मम्मा.....। बेटा.....। मेरा बच्चा। शिबू, हाउ आर यू? फाइन मम्मा। हैव यू फिनिश्ड योर लंच, शिबू? यस मम्मा। शिबू, अंकल को नमस्ते करो। नमस्ते अंकल। मम्मा, हू इज? मेरे ऑफिस के सर हैं। इनका नाम निरंजन है। निरंजन–नमस्ते सर! विश्वा–नमस्ते! मम्मा, व्हेयर इज माइ ट्वाय? मां–बेटे के बीच का वार्तालाप निरंजन को यक्ष–युधिष्ठिर के संवाद याद दिला रहा था। मम्मा, यू विल नॉट गो ऑफिस? नो शिबू, आई हैव टू गो ऑफिस। नो, मम्मा! नो ऑफिस। यस, बेटा! आई शैल गो टू ऑफिस। मम्मा..... ... । बेटा.....। शिव इस तरह अमृता पर अधिकार जताता रहा और अमृता हर बार ऑफिस की दुहाई दे रही थी। निरंजन इस बात से विद्वेलित हो रहा था कि माँ–बेटे के धर्मयुद्ध में आखिर विजय किसको मिलेगी? उधर विश्वा जीवन रूपी रथ को मौन रूप से चला रहा था। निरंजन मन ही मन सोच रहा था कि कलयुग में माँ–बेटे के बीच वात्सलय प्रेम कहाँ? रह–रहकर शिव अपनी बात मनवाना चाहता..... ....मम्मा यू विल नॉट गो टू ऑफिस! मगर हर बार अमृता का वही पत्थर सा जवाब– नो बेटा, आई हैव टू गो ऑफिस। मैडम, एक बार बोल दो ना कि आप ऑफिस नहीं जाओगी। नहीं निरंजन, इसका तो हर दिन का यही खेल है। वाह मैडम वाह! आप तो माँ की नई परिभाषा लिख रही हो। अमृता के चेहरे पर हल्की मुस्कान देखकर शिव फिर से अपनी बात दोहराता लेकिन मासूम शिव को माँ के रहस्यमय जीवन का पता नहीं कि माँ की एक अलग दुनियां भी है– ऑफिस की दुनियां। जहां सिर्फ और सिर्फ कर्तव्यपरायणता ही जीवन ध्येय है। जब भी शिव, यक्ष की तरह सवाल करता है तो यही कर्तव्यपरायणता अमृता को चट्टानमयी निर्णय लेने की झिझक को रोकता है। कभी शिव को एक टक निहारती है तो कभी पुचकारती है, कभी ममत्व लुटाती है, कभी उसकी जिद देखकर मौन हो जाती है। अभी तो (कलाई घड़ी की ओर देखती है) दो ही बजे हैं!

सहसा याद आता है– हमें तो ऑफिस भी जाना है। विश्वा अपने फ्लैट के पास गाड़ी रोक देता है। यार, मुझे तो ऑफिस जाना है। विश्वा.....हां–हां जाओ। शिव फिर अपनी बात दोहराता है – मम्मा, यू विल नॉट गो टू ऑफिस! बेटा, आई शैल कम सून। मम्मा.....! बे..... टा, आई.....शैल..... कम.....सून ! क–म–सू–––न !

–राजभाषा अधिकारी
आंचलिक कार्यालय नोएडा

बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री स्वरूप कुमार साहा के कर कमलों से

नई शाखाओं का शुभारंभ

शाखा लिलुआ, पश्चिम बंगाल

शाखा बिहार शरीफ, बिहार

शाखा देवास, मध्यप्रदेश

क्रोध में मनुष्य अपने मन की बात कहने के बजाय दूसरों के हृदय को ज्यादा दुखाता है - मुंशी प्रेमचंद।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक (अप्रैल–जून 2023)

माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी महोदय की अध्यक्षता में दिनांक 19 जून, 2023 को प्रधान कार्यालय स्तरीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक संपन्न हुई। कार्यकारी निदेशक (केवीआर), कार्यकारी निदेशक (राम) सहित प्रधान कार्यालय में पदस्थ महाप्रबंधक, उप महाप्रबंधक (स्वतंत्र प्रभार) तथा अन्य उच्चाधिकारी बैठक में उपस्थित रहे। बैठक में बैंक की राजभाषा कार्यान्वयन स्थिति तथा विभिन्न निरीक्षण के दौरान बैंक द्वारा संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति को दिए गए आश्वासनों पर विस्तृत चर्चा की गई।

ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

(भारत सरकार का उपक्रम)

पी.एस.बी

Punjab & Sind Bank

(A Govt. of India Undertaking)

जहाँ सेवा ही जीवन - ध्येय है

PSB UniC
You & I Connected
Mobile & Internet Banking Solution

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

पीएसबी डिजीलॉकर

डिजीलॉकर खाता रखने वाले ग्राहक अब इसे देख/डाउनलोड कर सकते हैं ।

- संक्षिप्त खाता विवरणी
- टीडीएस प्रमाणपत्र
- ब्याज प्रमाणपत्र (जमा/ऋण)

किसी भी समय (24X7)

डिजीलॉकर ऐप या डिजीलॉकर वेब पोर्टल के माध्यम से

अभी साईन अप करें

DigiLocker
Your documents anytime, anywhere

https://punjabandsindbank.co.in

ई-मेल : ho.customerexcellance@psb.co.in

पीएसबी व्हाट्सएप बैंकिंग

7799962838 नंबर पर "Hi" भेजें

पी.एस.बी शुभारंभ करता है

व्हाट्सएप बैंकिंग

मौजूदा ग्राहकों के लिए उपलब्ध सेवाएं

- ★ खाते की जानकारी
- ★ संक्षिप्त खाता विवरणी
- ★ खाते में शेष राशि की जानकारी

मौजूदा ग्राहकों के साथ-साथ नये ग्राहकों के लिए भी उपलब्ध सेवाएं

- ★ खाता खोलना
- ★ ऋण हेतु आवेदन
- ★ एफएक्यू
- ★ हमें संपर्क करें
- ★ शाखा लोकेटर (खोजें)
- ★ पीओएस हेतु आवेदन
- ★ ऑफर्स
- ★ शिक्षण वीडियो
- ★ पीएसबी यूनिक
- ★ शिकायतें

1800 419 8300 (टोल फ्री)

हमारा अनुसरण करें @PSBIndOfficial